आदरणीय गुरुदेव...

आपके साथ कुछ लम्हे कई
यादें बतौर ईनाम मिले,
एक सफर पर निकले और
तजुर्बे तमाम मिले....

→ आप स्प्रिंगबोर्ड आना...
आपको नवीन सर से मिलवाऊंगा जरूर

एक बार ही सही.....
सभी थानाधिकारी.... अपने अपने थाने में बैठ जाए वाला
किस्सा सुनवाऊंगा जरूर

मुझे बस अब नवीन सर से ही हिन्दी सीखनी है....
वो व्याकरण की बातें.... मुहावरे और लोकोक्तियाँ सीखनी है...

मुझे यकीन है यहाँ में सरकारी नौकरी लग जाऊंगा...
सर के साथ से.... बेरोजगारी पार कर जाऊंगा.....

→ लोग पूछेंगे.... थोड़े दिन बाद तुम्हारा पेपर है.... घबराते क्यों नही
मैं कहूंगा .... स्प्रिंगबोर्ड में नवीन सर है.... तुम आजमाते
क्यों नही....

→ तुम परीक्षा समय पर करवाना.... मैं आऊंगा जरूर
नवीन सर से इतनी हिन्दी पढ़ी है... कुछ करके जाऊंगा
जरूर.....

मुझे तुम्हारें पेपर बनाने की औकात देखनी है....
हम सब की जीत.... सिर्फ तुम्हारी हार देखनी है....

उस रोज मैं.... तुमसे कलम से लडूंगा।
जिस रोज मैं परीक्षा देने हॉल में बैठूंगा।

→ लोग पूछेंगे तुम्हारी आँखों में पेपर का खौफ क्यों नहीं -
मैं कहूंगा..... स्प्रिंगबोर्ड के शिक्षकों की पढाने के आगे
पेपर की औकात नहीं।

धर्मराज गुर्जर

* वक्त की हो धूप या तेज हो आँधियाँ
कुछ कदमों के निशान कभी नहीं खोते,
जिन्हे याद करके मुस्कुरा दे ये आँखे,
वो लोग दूर होकर भी दूर नहीं होते....

धर्मराज गुर्जर -

|| श्री || (1)

08/03/25

वर्ण
*

• हिन्दी भाषा की वह छोटी से छोटी ध्वनि जिसके और अधिक टुकड़े नहीं किए जा सके वर्ण कहलाते हैं।

→ वर्णों के व्यवस्थित समूह को वर्णमाला कहते हैं।

→ हिन्दी वर्णमाला में वर्णों की संख्या = (44)
→ हिन्दी बालपोथी में = 49
→ देवनागरी हिन्दी लिपी में = (52)

एकवचन → बहुवचन
वर्ण → वर्णों
शब्द → शब्दों
मात्रा → मात्राएँ | मात्राओं
ता / ती > है। , ते हैं।
में | नहीं

दिन → दिवस
दीन → गरीब
अरि → शत्रु
अरी → सखी

वर्ण के भेद
*

→ वर्ण के (2) भेद होते हैं। (1) स्वर
(2) व्यंजन | व्यञ्जन

स्वर → वे वर्ण जिनका उच्चारण स्वतंत्र रूप से किया जा सके या अन्य किसी वर्ण की सहायता के बिना उच्चारण किया जा सके स्वर कहलाते हैं। ये संख्या में (11) होते हैं। जबकि मात्राएँ → (10)

कि → योजक शब्द

classmate
Date
Page

02/03/25 ॥ श्री ॥

क वर्ग → क ख ग घ ङ
च वर्ग → च छ ज झ ञ
ट वर्ग → ट ठ ड ढ ण
त वर्ग → त थ द ध न
प वर्ग → प फ ब भ म

संजय | सञ्जय
संतोष | सन्तोष
पंडित | पण्डित
कंचन | कञ्चन
पंकज | पङ्कज
संधि → सन्धि
संबंध | सम्बन्ध
पंचांग | पञ्चाङ्ग (SI 2011)

अन्तःस्थ व्यञ्जन

→ अन्तःस्थ का शाब्दिक अर्थ होता है - अन्दर की ओर या मध्य में रहने वाला।

→ वो वर्ण जिनका उच्चारण करते समय श्वास वायु मुख में अन्दर की ओर प्रवेश करती है अन्तःस्थ व्यञ्जन कहलाते हैं। ये संख्या में चार होते हैं। [य र ल व]

⊛ ऊष्म व्यञ्जन

ऊष्म का शाब्दिक अर्थ होता है - गर्म

वे वर्ण जिनका उच्चारण करते समय श्वास वायु मुख से वाष्प के रूप में बाहर निकलती है, ऊष्म व्यञ्जन कहलाते हैं। ये संख्या में चार होते हैं। [श ष स ह]

* संयुक्त वर्ण

→ दो व्यञ्जनों के मेल से बने वर्ण संयुक्त वर्ण कहलाते हैं।

		शब्दकोश
क्ष →	क् + ष	क ⊥ ख
त्र →	त् + र	त ⊥ थ
ज्ञ →	ज् + ञ	ज ⊥ झ
श्र →	श् + र	श ⊥ ष

|| श्री ||

Date
Page

02/03/25

संयम	संख्या
संसार	संध्या
मंत्र	पंक्ति
संवाद	व्यंग्य
संहार	संग्रह
संज्ञा	संस्कार
संक्षेपण	संयासी
स्वतंत्र	सन्यासी
संयुक्त	सन्यासी
संलग्न	सन्न्यासी ✓

(2025 BPE)

अन्य | सामान्य
कन्या

अपवाद

प्र० हिन्दी शब्दकोश के अनुसार सबसे पहले लिखा जाएगा।

③ A. लक्ष्य → ल् + अ + क् + ष् + य् + अ

② B. लक्ष्मण → ल् + अ + क् + ष् + म् + अ + ण् + अ

① C. लक्षण → ल् + अ + क् + ष् + अ + ण् + अ ✓

④ D. लखन → ल् + अ + ख् + अ + न् + अ

② ② कमल → क् + अ + म् + अ + ल् + अ

कञ्चन ① कंचन → क् + अ + ञ् + च् + अ + न् + अ

③ कृपा → ~~क् + ऋ + प् + आ~~ + आ क् + ऋ + प् + आ

④ क्या → क् + य् + ~~आ~~ + आ

|| श्री ||

Date
Page

02/03/25

अयोगवाह वर्ण =>

→ वे वर्ण जिनका योग न होने पर भी साथ-साथ चलते हैं, वे न तो स्वर होते हैं और न व्यञ्जन होते हैं, अयोगवाह वर्ण कहलाते हैं। [अं अः]

अं ↓ अनुस्वार, अः → विसर्ग

Note → हिन्दी शब्दकोश की शुरुआत इन्हीं वर्णों से मानी गई है → [अं अँ अः अ
कं कँ कः क - - - - - हैं]

प्रश्न → हिन्दी शब्दकोश के अनुसार सबसे पहले लिखा जाएगा

कंस कंस → क् + अं + स् + अ ①
कङ्काल कंकाल → क् + अ + ङ् + क + आ + ल् + अ ②
कञ्चन कंचन → क् + अ + ञ् + च् + अ + न् + अ ③
कञ्जर कंजर → क् + अ + ञ् + ज् + अ + र् + अ ④

उत्क्षिप्त वर्ण

→ जिन ध्वनियों के उच्चारण में ~~जीवहा जीव्हा~~ जिह्वा मूर्धा को स्पर्श कर तुरंत नीचे गिरती हैं उत्क्षिप्त वर्ण कहलाते हैं। [ड़ ढ़]

नियम → ① यदि शब्द की शुरुआत इन वर्णों से हो तो लिखते समय इनके नीचे बिन्दु नहीं लगता है।
जैसे → डमरू, ढोलक, डालियाँ, ढक्कन, डाली।

नियम → ② यदि शब्द के अन्तर्गत इनसे पहले आधा वर्ण आता है, तो भी लिखते समय इनके नीचे बिंदु नहीं आता है → पण्डित, अड्डा, बुड्ढा, खण्ड, मण्डल

|| श्री || :

02/03/25

→ उपर्युक्त दोनों नियमों के अलावा प्रत्येक स्थिति में इनके नीचे बिन्दु आता है।
जैसे → पढ़ाई, लड़ाई, सड़क, पकड़ना, ढूँढ़ना ।

रेफ # (र सम्बन्धी नियम)

→ यदि (र) के बाद व्यञ्जन वर्ण आए तो (र) को उसी व्यञ्जन वर्ण के ऊपर लिखते हैं।
अर्थात → जिस व्यञ्जन वर्ण से पहले (र) का उच्चारण किया जाता है (र) को उसी व्यञ्जन वर्ण के ऊपर लिखा जाता है।
जैसे → गर्म, कर्म, वर्ण, स्वर्ग, अर्थात, पुनर्जन्म, पुनर्निर्माण, बहिर्मण्डल, धर्म, आशीर्वाद आदि।

II → यदि (र) से पहले व्यञ्जन वर्ण आता है तो (र) को उसी व्यञ्जन वर्ण के मध्य में लिखा जाता है, जैसे → प्रकाश, प्रभात, प्रेम, क्रम, श्रम, भ्रष्ट, भ्राता आदि।

III → (ट) वर्ग में (र) को हमेशा वर्ण के नीचे लिखा जाता है जैसे → राष्ट्र, ट्रक, ड्राइवर, ड्रग्स, ड्रामा, षड्राग, षड्रस आदि।

प्र॰ हिन्दी शब्दकोश के अनुसार सबसे अन्त में लिखा जाएगा।

1. करण → क् + अ + र् + अ + ण् + अ
2. कर्म → क् + अ + र् + म् + अ
3. क्या → क् + य् + आ
4. क्रम → क् + र् + अ + म् + अ

(1)

।श्री।

Date
Page

02/3/25

प्र० हिन्दी शब्दकोश के अनुसार सबसे अन्त में लिखा जाएगा।

(2) श्रम → श् + र् + अ + म् + अ
(3) श्रेष्ठ श् + र् + अ + ष् + ट् + अ
(4) श्राता → श् + र् + आ + त् + आ
(1) भाई → भ् + आ + ई

प्र० हिन्दी शब्दकोश के अनुसार सबसे पहले लिखा जाएगा-

(3) पृथ्वी → प् + ऋ + थ् + व् + ई
(2) पृथु → प् + ऋ + थ् + उ
(1) पृथा → प् + ऋ + थ् + आ ✓
(4) प्रेम → प् + र् + ए + म् + अ

|श्री|

(2)

Date 10/03/28
Page

सन्धि < मेल
विग्रह

आपसी निकटता के कारण दो वर्णों के मेल से उत्पन्न विकार को संधि कहते हैं।

→ सन्धि का अर्थ होता है → मेल और विलोम → विग्रह
उदा → हिम + आलय → हिमालय
जगत् + नाथ → जगन्नाथ
निः + धन → निर्धन

संधि के भेद :-

1. स्वर संधि - 11
2. व्यञ्जन संधि - 33
3. विसर्ग सन्धि - 1

* स्वर सन्धि

परस्पर स्वर का स्वर के साथ मेल होने पर जो विकार उत्पन्न होता है उसे स्वर सन्धि कहते हैं।

जैसे → देव + आलय → देवालय
रमा + ईश → रमेश
एक + एक → एकैक
यदि + अपि → यद्यपि
भौ + उक → भावुक

* स्वर सन्धि के भेद

(1) दीर्घ स्वर सन्धि
2. गुण स्वर सन्धि
3. वृद्धि स्वर सन्धि
4. यण सन्धि
5. अयादि सन्धि

श्री

10/03/25

दीर्घ सन्धि

*

[ा, ी, ू

नियम → यदि ह्रस्व या दीर्घ स्वर (अ इ उ) के बाद समान ह्रस्व या दीर्घ स्वर आए तो दोनो के स्थान पर दीर्घ एकादेश होता है।

युग + अन्तर
युग् + अ + अन्तर
युग् आ न्तर
युगान्तर
युग् आन्तर
युग् आ + आ न्तर
अ अ
युग + अन्तर

हिम + आलय - हिमालय
हिम् आ लय
हिम् आ + अ लय
अ आ
→ हिम + आलय

अ + अ
अ + आ
आ + अ
आ + आ
= आ = ा

Ex राम + अवतार → रामावतार (सम्बन्ध तत्पुरुष समास)
राम + अनुज → रामानुज
तथा + अपि → तथापि

बन्दर कपि + ईश (स्वामी) → कपीश (हनुमान) (बहुव्रीहि)

मुनि + इन्द्र → मुनीन्द्र (अधिकरण त० समास)

काम + अयनी → कामायनी

लघु + उत्तर → लघूत्तर

लघु + ऊर्मि (लहर) → लघूर्मि (कर्मधारय) (छोटी है जो लहर)

श्री

10/3/25

विलोम → अधः

भू + ऊर्ध्व → भूर्ध्व

दाख (चटनी) द्राक्षा + अवलेह → द्राक्षावलेह (सम्बन्ध तत्पुरुष स.) दाख की चटनी

गुरु + उपदेश → गुरूपदेश → (गुरु का उपदेश

वधू + उत्सव → वधूत्सव

× वधु

मोती मुक्ता + अवली (पंक्ति) → मुक्तावली (मोतियों की माला) (स.त.स.)

विद्या + अर्थी (इच्छुक) → विद्यार्थी (अरथी → शवयात्रा)

विद्या + आलय → विद्यालय (सम्प्रदान त. समास)

महा + अमात्य (मंत्री) → महामात्य (कर्मधारय) (महा/परम → कर्मधारय)

स्व + अधीन → स्वाधीन

राक्षस दैत्य + अरि (शत्रु) → दैत्यारि | देव | इन्द्र | विष्णु

सत्य + अर्थी → सत्यार्थी

प्रेरणा + आस्पद → प्रेरणास्पद

घृणा + " → घृणास्पद

विवाद + आस्पद → विवादास्पद

लाल लोहित + अश्व (घोड़ा) → लोहिताश्व (कर्मधारय)

रात रजनी + ईश (स्वामी) → रजनीश → चन्द्रमा (बहुव्रीहि)

तीव्र महती + इच्छा → महतीच्छा → (कर्मधारय)

नाग फणी + ईश → फणीश → शेषनाग → बहुव्रीहि

|आ|

Date
Page

10|3|25

राक्षस
मुर + अरि → मुरारि (कृष्ण → बहुव्रीहि)

घास
कुश + आसन → कुशासन (घास का आसन / सं.त. समास) (कु + शासन)
→ कर्मधारय, बुरा है जो शासन

चिपकना
श्लेष + अलंकार → श्लेषालंकार

कतार
दीप + अवली → दीपावली (दीपो की कतार → सं.त. समास)

कतार
गीत + अंजलि → गीतांजलि (गीतों की पंक्ति (")

अच्छा/भला
भद्र + आसन → भद्रासन (कर्मधारय)

सूर्य, स्वामी
रवि + इन्द्र → रवीन्द्र | इन्द्र → बहुव्रीहि

अभि + इष्ट → अभीष्ट

अच्छा, कथन
सु + उक्ति → सूक्ति → (कर्मधारय समास)

कटु + उक्ति → कटूक्ति → कर्मधारय (कठोर है जो वचन)

सेना
चमू + उत्साह → चमूत्साह (सं.त.स)

लहर
सरयू + ऊर्मि → सरयूर्मि ↗

चिर + आयु → चिरायु → कर्मधारय

हजार
सहस्र + अब्दी → सहस्राब्दी → (द्विगु)

देश + अटन → देशाटन → अधिकरण त. समास)

अन्तिम
अन्त्य + अक्षरी → अन्त्याक्षरी

अन्त → समाप्त
अन्त्य →

|श्री|

Date
Page

10|3|28

(लक्ष्मी) श्री + ईश → श्रीईश | विष्णु → बहुव्रीहि

(खरगोश) शश + अंक → शशांक (वह जिसकी गोद में खरगोश है। ↳ चन्द्रमा → बहुव्रीहि)

वि + ईक्षण (देखना) → वीक्षण

मुक्त + आकाश → मुक्ताकाश → स्वतंत्र है जो आकाश → कर्मधारय)

जन + अर्दन (मारना) → जनार्दन → कृष्ण ↳ बहुव्रीहि

शची + ईश → शचीश → इन्द्र

दीक्षा + अन्त → दीक्षान्त

दाव + अनल → दावानल

(दाख) द्राक्षा + आसव (रस) → द्राक्षासव (स.त.स)

मनु + उपदेश → मनूपदेश

(कैदी) कारा + आगार (घर) → कारागार (जेल)

* सप्त + अहन् (दिन) → सप्ताह (द्विगु)

(पानी) वारि + ईश → वारीश → बहुव्रीहि

(पृथ्वी) मही + ईश → महीश (शिव)

(चन्द्रमा) विधु + उदय → विधूदय

न बहु + ऊर्जा → बहूर्जा

|श्री|

Date
Page

10/3/25

पवित्त + आत्मा → पवित्तात्मा (कर्मधारय)

पंच + अमृत → पंचामृत (द्विगु)

* दीर्घ संधि की पहचान → दीर्घ सन्धि युक्त शब्दों में अधिकांशत: [आ ई ऊ] की मात्राएँ [ा, ी, ू] आती है। और इनका विच्छेद इन्ही मात्राओं से किया जाता है।

शक + अन्धु → शकन्धु
कर्क + अन्धु → कर्कन्धु
पितृ + ऋण → पितृण
मातृ + ऋण → मातृण
विश्व + मित्त → विश्वामित्त
दीन + नाथ → दीनानाथ
मूसल + धार → मूसलाधार
मनस् + ईषा → मनीषा
युवन् + अवस्था → युवावस्था
अप + अंग → अपंग
कुल + अटा → कुलटा

अपवाद
*

गुण सन्धि
*

नियम → यदि अ|आ के बाद इ|ई आए तो दोनो के स्थान पर ए (े) हो जाता है।
अर्थात → [अ|आ + इ|ई = ए = े]

II यदि अ|आ के बाद उ|ऊ आए तो दोनो के स्थान पर ओ (ो) हो जाता है।
अर्थात [अ|आ + उ|ऊ = ओ = ो]

|श्री|

Date ______
Page ______

10|3|25

(ii) यदि अ/आ के बाद ऋ आए तो दोनों के स्थान पर अर् हो जाता है। [अ/आ + ऋ = अर्]

ए ओ अर् → गुण
अ इ उ ऋ
\+ \+ \+ \+
अ इ उ ऋ
⇓ ⇓ ⇓ ⇓
दीर्घ → आ ई ऊ ॠ

गज + इन्द्र
गज् अ + इन्द्र
गज् ए न्द्र
गजेन्द्र
गज् ए न्द्र
गज् आ + ईन्द्र
अ + इ
गज + इन्द्र → गजेन्द्र

हरिण स्वामी
मृग + इन्द्र → मृगेन्द्र → शेर (पर्यायवाची)
→ बहुव्रीहि

लक्ष्मी रमा + ईश → रमेश → विष्णु
देव सुर + ईश → सुरेश → इन्द्र
→ बहुव्रीहि

नर + ईश → नरेश (राजा)

पर + उपकार → परोपकार

यथा + उचित → यथोचित (अव्ययीभाव)

यथा + इच्छा → यथेच्छा

पुरुष + उत्तम → पुरुषोत्तम → (अधिकरण त.स)
→ कर्मधारय

नर + उत्तम → नरोत्तम → ,,

कथा + उपकथन → कथोपकथन

लहर
गंगा + ऊर्मि → गंगोर्मि (ष.त.स.)

।श्री।

आध + उढा → अध्यूढा
कान्त → सुन्दर

10/3/23

(ओढना / युवती)
नव + ऊढ़ा → नवोढ़ा (वह स्त्री जिसकी अभी-अभी शादी हुई है)

(रात)
राका + ईश → राकेश → चन्द्रमा
→ बहुव्रीहि

(नींद)
गुड़ाका + ईश → गुडाकेश → (शिव, अर्जुन)
→ बहुव्रीहि

(इन्द्रियों)
हृषीक + ईश → हृषीकेश → विष्णु

(पार्वती)
उमा + ईश → उमेश → शिव
→ बहु.

धन + ईश → धनेश → कुबेर
→ बहुव्रीहि

(लहर)
जल + ऊर्मि → जलोर्मि (सं.त. समास)

हृदय + ईश → हृदयेश → बहु

महा + उदय → महोदय

(लक्ष्मी)
कमला + ईश → कमलेश → विष्णु
→ बहु.
कमल ×

पतन + उन्मुख → पतनोन्मुख

(छोटा / पेट)
मन्द + उदरी → मन्दोदरी → बहुव्रीहि (छोटा पेट है जिसका वा)

सह + उदर → सहोदर

शुभ + इच्छु → शुभेच्छु

* न + इति → नेति

गण + ईश → गणेश — बहुव्रीहि

व्यंग्य + उक्ति → व्यंग्योक्ति (व्यंग्य पूर्ण कथन)
कर्मधारय

|श्री|

Date ______
Page ______

10|3|23

महा + उदय → महोदय

पंक्षी
खग + ईश → खगेश → बहुव्रीहि
→ गरुड़

करुणा + उत्पादक → करुणोत्पादक

दर्प + उक्ति → दर्पोक्ति → कर्म

स्व + उपार्जित → स्वोपार्जित (करण त. समास)

स्वेच्छा → स्व + ईच्छा इच्छा

भूतेश्वर → भूत + ईश्वर

सोत्साह → स + उत्साह

सूर्य
दिनेश → दिन + ईश

अन्योक्ति → अन्य + उक्ति

उच्चोर्ध्व → उच्च + ऊर्ध्व

साहित्योन्नति → साहित्य + उन्नति

महा + इन्द्र → महेन्द्र → इन्द्र | शिव (बहुव्रीहि)

राजा + इन्द्र → राजेन्द्र

द्वारका + ईश → द्वारकेश → कृष्ण
→ बहु०

मिथिला + ईश → मिथिलेश → जनक

|श्री|

10|3|25

अपवाद < प्र + ऊढ़ → प्रौढ़
अक्ष + ऊहिनी → अक्षौहिणी (सेना)

ऋ, र्, ष् → न् ↓ ण

राम + अयन → रामायण
प्र + मान → प्रमाण
शूर्प + नखा → शूर्पणखा
उत्तर + अयन → उत्तरायण
लक्ष्मण → लक्ष् + मन   [क्ष → क् + ष]

कण्व + ऋषि → कण्वर्षि   देव + ऋषि
देव् अ + ऋषि
सप्त + ऋषि → सप्तर्षि → (द्विगु)   देव् अर् षि
देवर्षि
ग्रीष्म + ऋतु → ग्रीष्मर्तु → कर्म.   देव + ऋषि

महा + ऋषि → महर्षि → कर्म.

राजा + ऋषि → ~~राजर्षि~~ राजर्षि → कर्मधारय

महा + ऋण → महर्ण → करमधारय

* वर्षा + ऋतु → वर्षर्तु
~~वर्ष~~ ×

देवर्षभ → देव + ऋषभ ऋषभ

सामर्चा → साम + ऋचा

शीतर्तु → शीत + ऋतु

महर्द्धि → महा + ऋद्धि

श्री

Date
Page

10/3/25

Imp गुण सन्धि की पहचान → गुण सन्धि युक्त शब्दों में अधिकांशत: [ए, ओ] की मात्राएँ [े, ो] या आधा र (र्) आता है और इसका विच्छेद इन्हीं मात्राओं से किया जाता है।

मीमांसी (7)
म् + ई + न् + आ + क् + ष + ई

वृद्धि सन्धि
*

व् ऋ द् ध् इ → (5)

नियम → यदि अ|आ के बाद ए|ऐ आए तो दोनों के स्थान पर ऐ (ै) हो जाता है अर्थात [अ|आ + ए|ऐ = ऐ = ै]

II यदि अ|आ के बाद ओ|औ आए तो दोनों के स्थान पर औ (ौ) हो जाता है अर्थात [अ|आ + ओ|औ = ौ].

एक + एक
एक् अ + एक
एक् ए क
एकैक
एक् ऐ क
एक् अ + ए क
अ + ए
एक + एक

ऐ औ → वृद्धि संधि
↓ ↓
ए ओ अर (गुण)
↓ ↓ ↓
अ इ उ ऋ
↓ ↓ ↓
आ ई ऊ → दीर्घ संधि

रमेश सदैव (ही) घूमता रहता है।

सदा + एव → सदैव
हमेशा ही

पृथ्वी वसुधा + एव → वसुधैव

** स्व + ऐच्छिक → स्वैच्छिक

श्री

10/3/25

* * महा + ऐश्वर्य → ~~महौश्वर्य~~ महैश्वर्य (आनन्द)

जल + ओघ (लहर) → जलौघ [ष.त. समास]

परम + ओजस्वी → परमौजस्वी → कर्मधारय

वन + औषधि → वनौषधि

महा + औषधि → महौषधि → कर्मधारय

मत + ऐक्य → मतैक्य

हित + एषी (एक्य ×) → हितैषी

धन + एषणा → धनैषणा [ष.त. समास]

पुत्र + एषणा → पुत्रैषणा ↗

परम + औदार्य → परमौदार्य (कर्मधारय)

महा + औचित्य → महौचित्य ↗

* * महा + ऐन्द्रजालिक (जादूगर) → महैन्द्रजालिक

शुभ + एषी → शुभैषी

लोक + एषणा (इच्छा) → लोकैषणा

विश्व + ऐक्य → विश्वैक्य

* देव + ऐश्वर्य → ~~देवैश्वर्य~~ देवैश्वर्य

दीर्घ होता है।

10|3|25

तथा + एव → तथैव

गंगा + ऐश्वर्य → गंगैश्वर्य

दूध + ओदन (चावल) → दूधोदन → (द्वन्द्व समास)

तप + औदार्य (उदारता) → तपौदार्य

भाव + औचित्य → भावौचित्य

यथा + औचित्य → यथौचित्य (अव्ययीभाव)

महा + औत्सुक्य (उत्सुकता) → महौत्सुक्य (कर्मधारय)

मंत्र + औषधि → मंत्रौषधि

* पहचान → वृद्धि सन्धि युक्त शब्दों में अधिकांशतः [ऐ/औ] (ै, ौ) की मात्राएँ आती हैं। और इसका विच्छेद इन्हीं मात्राओं से किया जाता है।

अपवाद :-

शुद्ध + ओदन (चावल) → शुद्धोदन
दन्त + ओष्ठ होंठ → दन्तोष्ठ
निचली अधर + ओष्ठ → अधरोष्ठ
बिम्ब + ओष्ठ → बिम्बोष्ठ

श्री

10/03/25

यण् सन्धि
*

इ/ई → य्
उ/ऊ → व्
ऋ → र्

नियम → यदि इ/ई/उ/ऊ/ऋ के बाद असमान स्वर आए तो इ/ई के स्थान पर (य्), उ/ऊ → (व्) तथा ऋ → (र्) हो जाता है।

यदि + अपि → यद्यपि
यद् + इ + अपि
यद् + य् + अपि
यद्यपि / यद्यपि
यदि + अपि
(x) यदी

सु + आगत - स्वागत
सु + उ + आगत
स् व् + आगत
स्वागत
सु + आगत
सू x

यदि अपि → यद्यपि

** (नि) + ऊन → ~~नवन~~ ~~नवन~~ न्यून

उपसर्ग (वि) + अय → ~~वाय~~ व्यय

वि + आयाम → व्यायाम

अति + आचार → अत्याचार

अत्यन्त → अति + अन्त

अत्यधिक → अति + अधिक

अत्युक्ति → अति + उक्ति

पर्याप्त → परि + आप्त

प्रत्येक → प्रति + अत्येक एक

प्रत्याशा → प्रति + आशा

श्री

Date ______
Page ______

10/3/23

** रीति + अनुसार   रीत्यानुसार / रीत्यनुसार.

नदी + आमुख → नद्यामुख / नद्यामुख

नदी + अम्बु → नद्याम्बु / नद्यम्बु

RAS 2016 गति + अवरोध → गत्यावरोध / गत्यवरोध

शहद शत्रु
मधु + अरि → मध्वरि → मध्वरि | भालू | कृष्ण | दुर्गा |

सु + अच्छ → स्वच्छ

धातु + इक → धात्विक   धात्विक

* साधु + आचरण → साध्वाचरण

शिशु + ऐक्य → शिश्वैक्य

पृथ्वी + आधार → पृथ्व्याधार   पृथ्व्याधार

स्त्री + उचित → स्त्र्युचित   स्त्र्युचित

नारी + उत्थान → नार्युत्थान

* द्वि + अर्थी → द्व्यर्थी | द्व्यर्थी

अधि + ऊढ़ा → अध्यूढ़ा (वह स्त्री जिसके पति ने दूसरी शादी करली

** (अनु) + एषण → अन्वेषण / अंवेषण

अधि + अक्ष → अध्यक्ष

यण

10/3/25

परि + आवरण → पर्यावरण

प्रभु + आदेश → प्रभ्वादेश

सिंधु + अर्चना → सिंध्वर्चना

परमाणु + अस्त → परमाण्वस्त

सखी + ऐक्य → सख्यैक्य

अति + उष्ण → ~~अत्युष्ण~~ अत्युष्ण

उपरि + उक्त → उपर्युक्त / उपरोक्त (x)

दधि + ओदन (चावल) → दध्योदन (द्वंद्व)

मही + आधार → मह्याधार / मह्याधार

स्त्री + उद्धार → स्त्र्युद्धार

वि + उत्पत्ति → व्युत्पत्ति

प्रति + आरोपण → प्रत्यारोपण

शक्ति + आराधना → शक्त्याराधना

पर्यटन → परि + अटन (भ्रमण)

वाण्यौचित्य → वाणी + औचित्य

गुर्वौदार्य → गुरु + औदार्य

श्री

Date
Page

10/3/25

अन्विति → ~~अग्नि + इति~~ | अनु + इति

इत्यादि → इति + आदि

अभ्युदय → अभि + उदय

जाति + एकता → जात्येकता

देवी + अर्पण → देव्यर्पण (सम्प्रदान तत्पुरुष समास) देवी के लिए अर्पण

नदी + अन्त → नद्यन्त | नद्यन्त

गुर्वाज्ञा → गुरु + आज्ञा

भान्वागमन → भानु (सूर्य) + आगमन

* वध्वागमन → वधू + आगमन

~~परि (चारों ओर) + अंक (गोद) पर्यंक (पलंग)~~

ध्वनि + अर्थ → ध्वन्यर्थ

नि + आय → न्याय

वि + अर्थ → व्यर्थ

सख्यागमन → सखी + आगमन | संख्या + आगमन → दीर्घ
संख्यागमन

मध्वालय → मधु + आलय

ध्वन्यालोक → ध्वनि + आलोक (प्रकाश) → (द्वन्द्व)

10/3/25

* गत्यनुसार → ~~गत्‍~~ गति + अनुसार

चम्वाक्रमण → चमू (सेना) + आक्रमण

* शिश्वंग → शिशु + अंग

देव्यर्पित → देवी + अर्पित

प्रत्यर्पण → प्रति + अर्पण

अभ्यर्थी → अभि + अर्थी

अभ्युदय → अभि + उदय

अन्वय → अनु + अय

व्यस्त → ~~वी~~ वि + अस्त

मध्वाचार्य → मधु + आचार्य

मन्वन्तर → मनु + अन्तर

वध्वैश्वर्य → वधू + ऐश्वर्य

वध्वाचरण → वधू + आचरण

अन्वीक्षा → अनु + ईक्षा (देखना)

विष्णवाराधना → विष्णु + आराधना

ऋ।

Date
Page

10/3/25

पितृ + आज्ञा → पित्राज्ञा
पित् ऋ + आज्ञा
पित् + र + आज्ञा   [तृ → त्र] हमेशा
पित्र + आज्ञा
पित्राज्ञा
पितृ + आज्ञा

मातृ + आज्ञा → मात्राज्ञा

पितृ + अनुमति → पित्रनुमति | ~~पित्रानुमति~~ ✗

मातृ + इच्छा → मात्रिच्छा

पितृ + उपदेश → पित्रुपदेश | ~~पित्र~~

धातृ + अंश → धात्रंश

भ्रातृ + उत्कण्ठा → भ्रात्रुत्कण्ठा

श्रोतृ + उत्सुकता → श्रोत्रुत्सुकता

पितृ + आलय → पित्रालय

मातृ + आदेश → मात्रादेश

पितृ + इच्छा → पित्रिच्छा

मातृ + ~~आदेश~~ उपदेश → मात्रुपदेश

श्रोतृ + उत्कण्ठा → श्रोत्रुत्कण्ठा

10|3|25

वक्तृ + उद्बोधन → वक्त्रुद्बोधन

स्वस्तृ + इच्छा → स्वस्त्रिच्छा

पहचान → यण सन्धि युक्त शब्दों में अधिकांशतः [य|व|र] से पहले आधा वर्ण आता है। और इनका विच्छेद इन्ही वर्णों से किया जाता है।

अयादि सन्धि

अयादि =

नियम →

यदि ए, ऐ, ओ, औ के बाद कोई भी स्वर आए तो [ए → अय, ऐ → आय, ओ → अव, तथा औ → आव] हो जाता है।

Ex.
ने + अन
न् ए + अन
न् अय् + अन
नयन → ने + अन
न् अ य् अ न् अ
न् ए + अन
ने + अन

गै + इका
ग् ऐ + इका
ग् आय् + इका
गायिका → गै + इका

पो + अन
प् ओ + अन
प् अव् + अन
पवन → पो + अन

भौ + इक
भ् औ + इक
भ् आव् + इक
भावुक → भौ + उक

श्री

Date ______
Page ______

10/3/25

* शे + अन → श् ए + अन
~~श् अय + अन → शयन~~

नै + अक → न् ऐ + अक
न् आय् + अक → नायक

भो + अन → भ् ओ + अन
भ् अव + अन → भवन

पौ + अक → प् औ + अक
प् आव् + अक → पावक (अग्नि)

* भौ + इक → भ् औ + इक
भ् आव् + इक → भाविक

धावक → धाव् + अक
धौ + अक

हवन → हव् + अन → हो + अन

गायक → गाय् + अक → गै + अक

चयन → चय् + अन → चे + अन

कवि → कव् + इ → को + इ

* आय → आय् + अ → ऐ + अ

अयादि → अय् + आदि → ए + आदि

* भव → भ् + अव भो + अ

भावी → भाव् + ई → भौ + ई

धाविका → धाव् + इका → धौ + इका

विधै + इका → विध् ऐ + इका
विध् आय + इका → विधायिका

श्री

10 11|3|25

जे + अ → ज ए + अ
ज अय् + अ → जय

विजे + अ → विज् + ए + अ
→ विज् + अय् + अ → विजय

भौ + उक भावुक

शो + अ → शव

हो + इ → हवि (हवन सामग्री)

शै + अक → शायक | तीर

शौ + अक → शावक (शेर का बच्चा)

श्रौ + अक → श्रावक (जैन उपासक)

श्रो + अन → श्रवण

नायिका → नै + इका

दायिका → दै + इका

* पवित्र → पो + इत्र

भविष्य भो + इष्य

हविष्य → हो + इष्य

गायन → गै + अन

गो + अक्ष गो गवाक्ष → अपवाद (खिड़की)
गो + इन्द्र → गवेन्द्र →

श्री

Date ______
Page ______

15/03/25

वटवृक्ष → वअटअ वृ ऋ क्ष अ = (वटो + ऋक्ष) ↷ उ
ओ
↓
वृक्ष

पहचान → अयादि सन्धि युक्त शब्दों में अधिकांशत: (य/व) वर्ण आते हैं लेकिन इनसे पहले कोई भी आधा वर्ण नहीं आता है।

व्यञ्जन सन्धि

व्यञ्जन के बाद स्वर या व्यञ्जन आने पर उनके मेल से जो विकार उत्पन्न होते हैं उसे व्यञ्जन संधि कहते हैं।

जैसे → वाक् + ईश → वागीश
जगत् + नाथ → जगन्नाथ

नियम (1) यदि वर्ग के प्रथम वर्ण क् च् ट् त् प् के बाद किसी भी वर्ग का तीसरा-चौथा वर्ण ग घ ज झ ड ढ द ध ब भ अन्तस्थ वर्ण य र ल व या कोई स्वर आए तो प्रथम वर्ण अपने ही वर्ग के तीसरे वर्ण में बदल जाते हैं

क् च् ट् त् प् + ग घ ज झ ड ढ द ध ब भ | य र ल व | स्वर
↓ ↓ ↓ ↓ ↓
ग् ज् ड् द् ब्

दिक् + गज → दिग्गज
जगत् + ईश → जगदीश

ऋक् + वेद → ऋग्वेद

स्वर अच् + अन्त → अजन्त

श्री

Classmate
Date
Page

15|3|20

षट् + गुण → षड्गुण

पानी अप् + ज (जन्म) → अब्ज / अब्ज (कमल)

प्रत्यय सुप् + अन्त → सुबन्त

* सत् + उपदेश → सदुपदेश | सदोपदेश ✗

तत् + उपरान्त → तदुपरान्त | तदोपरान्त ✗

जगत् + अम्बा → जगदम्बा (बहुव्रीहि)

भगवत् + गीता → भगवद्गीता

उत् + घाटन → उद्घाटन

वाणी वाक् + ईश → वागीश - वाचस्पति (बहु.)

दिशा दिक् + अम्बर (वस्त्र) → दिगम्बर (शिवजी) (बहु.)

✡ षट् + राग → षड्राग ✗ / षड्राग
षट् + रस → षड्रस ✗ / षड्रस
→ द्विगु

वाक् + जड़ता → वाग्जड़ता

वाक् + देवी → वाग्देवी (सरस्वती) बहु.

उत् + योग → उद्योग / उद्योग ✓

✓ जयत् + रथ → जयद्रथ ✗ | जयद्रथ ✓

15/03/25

दिक् + अन्त → दिगन्त

वाक् + ईश्वरी → वागीश्वरी

* तत् + रूप → ~~तद्रूप~~ | तद्रूप

जगत् + आनन्द → जगदानन्द

दिक् + विजय → दिग्विजय

षट् + यंत्र → षड्यंत्र

सम्यक् + वाणी → सम्यग्वाणी (कर्मधारय) अच्छी है जो वाणी.

बृहत् + आकाश → बृहदाकाश (कर्मधारय)

* प्राक् + ऐतिहासिक → प्रागैतिहासिक

जगत् + गुरु → जगद्गुरु

वाक् + जाल → वाग्जाल (कर्मधारय)

वाक् + दान → वाग्दान (सं. त. पुरुष)

उत् + दण्ड → उद्दण्ड

जगत् + आचार्य → जगदाचार्य

सत् + गति → सद्गति (कर्मधारय)

अच् + आदि → अजादि

श्री

15/03/25

षट् + अक्षर → ~~षड्क्षर~~ | ~~षड़क्षर~~ | षडक्षर ✓

षट् + भुजा → षड्भुजा → द्विगु

सत् + आत्मा → सदात्मा (कर्मधारय)

सत् + आनन्द → सदानन्द (,,)

सत् + भाव → सद्भाव (,,)

सत् + वाणी → सद्वाणी (,,)

सत् + व्यवहार → सद्व्यवहार (,,)

✓ षट् + आनन → षडानन (बहुव्रीहि)

IIrd नियम → " यदि वर्ग के प्रथमवर्ण (क्, च्, ट्, त्, प्) के बाद (न या म्) आए तो प्रथम वर्ण अपने ही वर्ग के पाँचवे वर्ण में बदल जाता है।

जगत् + नाथ → जगन्नाथ

* वाक् + ~~मुख~~ मय → वाङ्मय (करण त०स०) वाणी से युक्त

* ~~उ~~ उत् + नति → उन्नति

षट् + मुख → षण्मुख (बहु०)

उत् + मूलन → उन्मूलन

जगत् + मिथ्या → जगन्मिथ्या (कर्मधारय)

श्री

15/03/25

षट् + मास → षण्मास → द्विगु

सत् + निधि → सन्निधि

सत् + नारी → सन्नारी

षट् + मातुर → षण्मातुर

षट् + मूर्ति → षण्मूर्ति

बृहत् + माला → बृहन्माला (कर्मधारय)

दिशा दिक् + मय → दिङ्मय (करण त.स.)

उत् + माद → उन्माद

उत् + नद → उन्नद

वाणिक् + नीति → वाणिङ्नीति (कर्मधारय)

सम् + न →

षट् + नाम → षण्नाम / षण्णाम

षट् + नियमावली → षण्नियमावली

वाक् + नेत्र → वाङ्नेत्र → कर्म. (वाणी रूपी नेत्र)

दिक् + मण्डल → दिङ्मण्डल (कर्म.)

जगत् + माता → जगन्माता

श्री

15/03/25

चित् + मय → चिन्मय

उत् + नयन → उन्नयन

(ii)ब नियम → यदि म् के बाद स्पर्श वर्ण आए तो (म्) को स्पर्श वर्ण के अन्तिम वर्ण में बदल देते हैं। यदि अन्तस्थ, ऊष्म या संयुक्त वर्ण आए तो म् को अनुस्वार में बदल देते हैं। और यदि कोई स्वर आए तो दोनों को जोड़ देते हैं।

सम् + जय → सञ्जय

सम् + तोष → सन्तोष

सम् + ताप → सन्ताप

मृत्युम् + जय → मृत्युञ्जय

अलम् + कार → अलङ्कार

सम् + आचार → समाचार

सम् + भावना → सम्भावना

भयम् + कर → भयङ्कर / भयङ्कर

सम् + धि → ~~सन्धि~~ सन्धि

किम् + नर → किन्नर

सम् + रक्षण → संरक्षण

श्री

15/03/25

सम् + जीवनी → सञ्जीवनी

सम् + वर्धन → संवर्धन

सम् + वेग → संवेग

सम् + स्थान → संस्थान

सम् + निवेश → सन्निवेश

सम् + चालक → सञ्चालक

शम् + कर → शङ्कर

सम् + देह → सन्देह

अलम् + करण → अलङ्करण

सम् + वेदना → संवेदना

सम् + उच्चय → समुच्चय

सम् + गम → सङ्गम

सम् + कल्प → सङ्कल्प

सम् + सार → संसार

सम् + वाद → ~~संम्वाद~~ संवाद

सम् + सार → ~~संम्सार~~ ससार

श्री

15/03/25

उपसर्ग

सम् + ज्ञा → संज्ञा

सम् + यम → संयम

सम् + युक्त → संयुक्त

सम् + लग्न → संलग्न

सम् + गति → सङ्गति

नियम IVth → यदि स् या त वर्ग के बाद श् या च वर्ग आए तो स् के स्थान पर श् तथा त वर्ग के स्थान पर क्रमशः च वर्ग हो जाता है।

स् → श्
त् → च
थ → छ
द् → ज्
ध् → झ
न् → ञ

निस् + चिन्त → निश्चिन्त

उत् + चारण → उच्चारण

दुस् + शासन → दुश्शासन

सत् + चरित्र → सच्चरित्र (कर्मधारय)

उत् + छादन → उच्छादन

विद्युत् + छटा → विद्युच्छटा

उत् + छिन्न → उच्छिन्न

सत् + जन → ~~सच्जन~~ / सज्जन

श्री

16/03/25

उत् + ज्वल → उज्ज्वल

सत् + चित् + आनन्द → सच्चितानन्द | सच्चिदानन्द

यावत् + जीवन → यावज्जीवन (अव्ययीभाव)
यावद् + जीवन

नियम (5) यदि त् के बाद ह् वर्ण आए तो त् → द् तथा ह् → ध् हो जाता है।

उत् + हार → उद्धार | उद्धार

पत् + हति → पद्धति | पद्धति

तत् + हित → ~~तद्धा~~ तद्धित | तद्धित

उत् + हर्ता → उद्धर्ता | उद्धर्ता

उत् + हति (उठान) → उद्धति → उद्धति

उत् + हरण → उद्धरण | उद्धरण

उत् + हव → उद्धव | उद्धव

उत् + हृत → ~~उद्धृत~~ | उद्धृत
उद्धृत

नियम (6) यदि त् के बाद श् वर्ण आए तो त् के स्थान पर च् तथा श् के स्थान पर छ् हो जाता है।

उत् + शासन → उच्छासन

श्री

CLASSMATE
Date
Page

16/03/25

* उत् + श्वसन → उच्छ्वसन

उत् + शिष्ट → उच्छिष्ट (खाने के बाद बचा हुआ भोजन)

तत् + शिव → तच्छिव

सत् + शास्त्र → सच्छास्त्र

उत् + शेष → उच्छेष

* तत् + शंकर → तच्छंकर

उत् + श्वास → उच्छ्वास

5/2007 श्रीमत् + शरत् + चन्द्र → श्रीमच्छरच्चन्द्र

* उत् + श्रृंखला → उच्श्रृंखला ✗ / उच्छृंखला ✓

शरत् + शशि → शरच्छशि

उत् + शोषण (सुखाना) → उच्छोषण

जगत् + शान्ति → जगच्छान्ति

नियम (7) यदि त् के बाद ल् वर्ण आए तो त् के स्थान पर ल् हो जाता है।

उत् + लेख → उल्लेख

उत् + लंघन → उल्लंघन

श्री

16/03/23

उत् + लास → उल्लास

लास → गोद
लाश → शव

उत् + लोढ़ → उल्लोढ़

घास < कुश → अगला हिस्सा
लव → पिछला हिस्सा

तत् + लीन → तल्लीन

जगत् + लीन → जगल्लीन (अधि. त. स)

उत् + लेखन → उल्लेखन

उत् + लिखित → उल्लिखित

पत् + लव → पल्लव

तड़ित् + लेखा → तड़िल्लेखा

नियम → ⑧ यदि किसी स्वर के बाद छ वर्ण आए तो दोनो के मध्य (च्) का आगम होता है।

वि + छेद → विच्छेद

अनु + छेद → अनुच्छेद

आ + छादन - आच्छादन

प्रति + छेद → प्रतिच्छेदन

तरु + छाया → तरुच्छाया

लक्ष्मी + छाया → लक्ष्मीच्छाया

| अ |

16/03/25

वृक्ष + छाया → वृक्षच्छाया

हरि + छवि → हरिच्छवि

स्व + छन्द → स्वच्छन्द

मुख + छवि → मुखच्छवि

प्रति + छवि → प्रतिच्छवि

शिव + छाया → शिवच्छाया

मातृ + छाया → मातृच्छाया

नियम (9) यदि किसी स्वर के बाद स् तथाथ् वर्ण आए तो
स् → ष् व थ् → ठ् हो जाता है।

अनु + स्था → अनुष्ठा

प्रति + स्था → प्रतिष्ठा

* नि + स्थुर → निष्ठुर

अनु + स्थान → अनुष्ठान

युधि + स्थिर → युधिष्ठिर

प्रति + स्थित → प्रतिष्ठित

अधि + स्थाता → अधिष्ठाता

नि + स्था → निष्ठा

classmate
Date
Page

श्री

16|03|25

नियम (10) जिन शब्दों मे ऋ र ष् वर्ण आते हैं. वहाँ न का ण हो जाता है।

ऋ + न → ऋण

घृ + ना → घृणा

परि + नत → परिणत

परि + मान → परिमाण

प्र + आन → प्राण

राम + अयन → रामायण (दीर्घ संधि)

प्र + मान → प्रमाण

कृष् + न → कृष्ण

विष् + नु → विष्णु

परि + नाम → परिणाम

परि + नय → परिणय

पुरा + न → पुराण

प्र + मान → प्रमाण

कार + न → कारण

श्री

16/03/25

विसर्ग सन्धि

विसर्ग के बाद स्वर या व्यञ्जन आने पर इनके मेल से जो विकार उत्पन्न होता है उसे विसर्ग सन्धि कहते हैं।
जैसे → निः + आहार → निराहार
मनः + हर → मनोहर

(1) नियम → यदि विसर्ग से पहले (अ) को छोड़कर अन्य कोई स्वर आए तथा विसर्ग के बाद किसी भी वर्ग का 3, 4, 5, वर्ण, अन्तस्थ वर्ण या कोई स्वर आए तो विसर्ग का (र) हो जाता है।

निः गुण → निर्गुण

निः आहार → निराहार

निः + आशा → निराशा

* निः + अपराध निरपराध

निः + धन → निर्धन

निः + मल → निर्मल

निः + बल → निर्बल

आयुः + वेद → आयुर्वेद

आशीः + वाद → आशीर्वाद

श्री

CLASSMATE

Date
Page

16|03|25

दुः + अवस्था → दुरवस्था

दुः + घटना → दुर्घटना

दुः + गति → दुर्गति

* पुनः + जन्म → पुनर्जन्म → (अपवाद)

दुः + जन → दुर्जन (कर्मधारय)

निः + उपाय → निरुपाय

दुः + आचार → दुराचार

दुः + व्यवस्था → दुर्व्यवस्था

निः + दोष → निर्दोष

निः + लिप्त → निर्लिप्त

दुः + बुद्धि → दुर्बुद्धि

दुः + गन्ध → दुर्गन्ध

पुनः + उक्ति → ~~पुरु~~ पुनरुक्ति → (अपवाद)

बहिः + अंग → बहिरंग

निः + ईश्वर → निरीश्वर

निः + विकार → निर्विकार

श्री

16/03/25

निः + विघ्न → निर्विघ्न

निः + जन → निर्जन

दुः + भावना → दुर्भावना

नियम II → यदि विसर्ग से पहले (अ) हो तथा विसर्ग
* के बाद किसी भी वर्ग का 3,4,5 वाँ वर्ण अन्तस्थ
वर्ण या उष्म वर्ण आए तो (अ) और विसर्ग दोनों का
(ओ) हो जाता है।

मनः + ज
मन (अः) + ज
↓
ओ
मनोज

सरः + ज → सरोज → बहु

तालाब श्रेष्ठ
सरः वर → सरोवर (अधिकरण त.प.)

पयः + द → पयोद (बादल)

यशः + दा → यशोदा

यशः + गान → यशोगान

यशः + गाथा → यशोगाथा

यशः + वर्धन → यशोवर्धन

मनः + विज्ञान → मनोविज्ञान

श्री

Date
Page

16/03/25

मनः + हर → मनोहर (कृष्ण) बहुव्रीहि

मनः + रथ → मनोरथ

मनः + बल → मनोबल

मनः + विकार → मनोविकार

तमः + गुण → तमोगुण (कर्मधारय) बुरे है जो गुण

वयः + वृद्ध → वयोवृद्ध

अधः + गति → अधोगति (नीचे / पतन की ओर गति)

रजः + गुण → रजोगुण (कर्मधारय) सामान्य है जो गुण

मनः + रंजन → मनोरंजन

तपः + भूमि → तपोभूमि (सं. त. समास)

पयः + धर → पयोधर (इन्द्र, बादल, समुद्र)

तपः + लाभ → तपोलाभ

अधः + वस्त्र → अधोवस्त्र

अधः + मुख → अधोमुख

दिवः + ज्योति → दिवोज्योति (अखंड ज्योति)

मनः + योग → मनोयोग

श्री

16/03/28

तपः + बल → तपोबल

शिरः + रेखा → शिरोरेखा

मनः + योग → मनोयोग

मनः + वृत्ति → मनोवृत्ति

मनः + ~~विकार~~ विचार मनोविचार

तपः + धन → तपोधन (कर्मधारय) तप रूपी धन

शिरः + भूषण → शिरोभूषण (स.त.समास) शिर के लिए आभूषण

मनः + मंथन → मनोमंथन

सु + आगत ← स्वागत → स्व + आगत ~~x~~

(x) सु + आर्थ ← स्वार्थ → स्व + अर्थ

नियम III यदि बिसर्ग से पहले और बिसर्ग के बाद अ/आ हो तो प्रथम अ और बिसर्ग का ओ हो जाता है, तथा द्वितीय अ/आ का लोप हो जाता है।

अन्यः + अन्य → अन्योन्य

यशः + अभिलाषी → यशोभिलाषी

प्रथमः + अध्याय → प्रथमोध्याय

मनः + अभिराम → मनोभिराम

* मनः + आनन्द → मनोनन्द

श्री

16/03/25

मनः + अनुकूल   मनोनुकूल

मनः + आकांक्षा → मनोकांक्षा

मनः + अभिलाषा → मनोभिलाषा

नियम (V) यदि विसर्ग के बाद च्, छ्, या (श) आये तो विसर्ग का (श) हो जाता है।

जैसे- निः + चल → निश्चल

निः + चय → निश्चय

पुनः + च → पुनश्च

मनः + चेतना → मनश्चेतना

निः + छिद्र → ~~निश्छ~~ निश्छिद्र

निः + शंक → निश्शंक

कः + चित → कश्चित

निः + चेतना → निश्चेतना

पुनः + चर्या → पुनश्चर्या

निः + छल → निश्छल

** यशः + शरीर → यशश्शरीर

तपः + चर्या → तपश्चर्या

श्री

classmate
Date
Page

16/03/25

नियम ⑤ यदि विसर्ग से पहले इ, उ तथा विसर्ग के बाद ट, क, फ वर्ण आये तो विसर्ग का (ष्) हो जाता है।

निः कपट

निः कलंक → निष्कलंक

निः + पाप → निष्पाप

निः + कर्म → निष्कर्म

दुः + कर्म → दुष्कर्म

निः + पादन - निष्पादन

निः + फल → निष्फल

निः + काम → निष्काम

चतुः + पाद → चतुष्पाद (चार चरण → द्विगु)

बहिः + कृत → बहिष्कृत

धनु + टंकार → धनुष्टंकार

दुः + फल → दुष्फल

नियम ⑥ यदि विसर्ग से पहले (अ) और विसर्ग के बाद क, प, त आये तो विसर्ग के स्थान पर (स) हो जाता है।

श्री

16/03/25

नमः + कार → नमस्कार

पुरः + कार → पुरस्कार | पुरुस्कार ~~पुरुस्कार~~ (X)

विः + तार → विस्तार → (अपवाद)

नमः + ते → नमस्ते

भाः + ~~कर~~ कर → भास्कर

संस्कृत में
रुत्व विसर्ग → र् → : ①
उत्व विसर्ग ओ → : ②③
सत्व विसर्ग श्, ष्, स् → : ④⑤

तिरः + कार → तिरस्कार

विः + तृत → विस्तृत (अपवाद)

मनः + ताप → मनस्ताप

वाचः + पति → वाचस्पति

श्रेयः + कर → श्रेयस्कर

नियम ④ यदि विसर्ग के बाद (र) वर्ण आए तो विसर्ग से पह लघु मात्रा को दीर्घ मात्रा में बदल देते हैं तथा विसर्ग का लोप हो जाता है।

निः + रस → नीरस

निः + रोग → नीरोग

> निः + रज → नीरज (X)
> पानी (जन्म)
> सामासिक पद है।

निः + ~~रव~~ रव → ~~नीरव~~ नीरव (शान्त, एकान्त, जनरहित स्थान)

दुः + राज → दूराज

27/02/25

समास

* समास का अर्थ → संक्षिप्तता
* समास का विलोम → (व्यास)

* दो या दो से अधिक (पदों) के मेल को समास कहते हैं
जैसे → यथाशक्ति, माता-पिता, नीलकमल, रसोईघर,
दशानन, चौमासा, आदि में संधि नहीं होती।

संधि और समास में अन्तर

(I) संधि में वर्ण आपस में मिलते हैं। जबकि समास में पद →

II) संधि में वर्णों के मिलने पर विकार उत्पन्न होता है।
जबकि समास में नहीं।

Note → दो पदों के मिलने पर यदि विकार उत्पन्न होता है
तो संधि के नियम काम करते हैं।

\# समास का अपना ऐसा कोई नियम नहीं होता है।
जैसे → सुर + असुर = सुरासुर
रसोई + घर → रसोईघर

* समस्त पद दोनों पदों के मध्य सम्बंध सूचक शब्दों को हटाने पर जो संक्षिप्त रूप शेष बनता है, उसे समस्त पद या सामासिक पद कहते हैं।
जैसे → रसोई के लिए घर → रसोईघर

* समास विग्रह → दोनो पदों के सम्बंध-सूचक शब्दो को व्यक्त कर देना समास विग्रह कहलाता है।
जैसे → रसोई (के) घर → रसोई के लिए घर

Date ______
Page ______

||श्री||

26/01/25

टिप्पणी → समास में अधिकांशत दो पद होते हैं, प्रथम पद को पूर्व पद तथा द्वितीय पद को उत्तर पद या पर पद कहा जाता है।

* समास में कभी प्रथम पद की प्रधानता, कभी द्वितीय पद की प्रधानता, कभी दोनों पदों की प्रधानता तो कभी अन्य पद की प्रधानता होती है।

* द्वन्द्व समास में सर्वाधिक पद होते हैं।
(द्वन्द्व)

समास के भेद

पद की प्रधानता के आधार पर समास के चार भेद होते हैं।

(1) प्रथम पद की प्रधानता → अव्ययीभाव
2) द्वितीय पद की प्रधानता → तत्पुरुष → कर्मधारय, द्विगु
3) दोनों पदों की प्रधानता → द्वन्द्व समास
4) अन्य पद की प्रधानता → बहुव्रीहि

* अव्ययीभाव समास → का शाब्दिक अर्थ होता है. अव्यय हो जाना।
जिस समास में प्रथम पद अव्यय तथा प्रधान हो और द्वितीय पद संज्ञा हो, या पद की पुनरावृत्ति हो उसे अव्ययी भाव समास कहते हैं।

Note → जिस पद में उपसर्ग जुड़ा हो (अभावात्मक, नकारात्मक विशेषणात्मक को छोड़कर) वह पद अधिकांशत: अव्ययी भाव समास का उदा. होता है।

जैसे → प्रथम पद अव्यय
यथा शक्ति → शक्ति के अनुसार
यथा स्थिति → स्थिति के अनुसार | जैसी स्थिति हो
यथा क्रम → क्रम के अनुसार

|| श्री ||

Date ______
Page ______

27/02/25

अव्ययी भाव समास

यथापति → पति के अनुसार | जैसा पति हो
यथासम्भव → जितना सम्भव हो
यथाशीघ्र → जितनी जल्दी हो
यथानियम → नियम के अनुसार
* यथोचित → जितना उचित हो
* यथेच्छा → जितनी इच्छा हो | इच्छा के अनुसार] गुण संधि
यथार्थ → वास्तविकता के अनुसार
यावज्जीवन → जीवन पर्यन्त | जब तक जीवन है।
दिनभर → जब तक दिन है।
यमुना पार → यमुना के पार
जीवन भर → जब तक जीवन है।
विवेकपूर्वक → विवेक के साथ
विश्वासपूर्वक → विश्वास के साथ
कुशलता पूर्वक → कुशलता के साथ

प्रथम पद उपसर्ग

आजीवन → जीवनभर
आसमुद्र → समुद्र पर्यन्त
अनुरूप → रूप के योग्य | अनुसार
प्रतिदिन → प्रत्येक दिन
प्रतिवर्ष → प्रत्येक वर्ष
सप्रसंग → प्रसंग के साथ | प्रसंग सहित
अधिगम → आगे की ओर गति
निर्विवाद → बिना विवाद के
हररोज → प्रत्येक दिन
सकुशल → कुशलता सहित | पूर्वक
अति वृष्टि → अत्यधिक वृष्टि

|| श्री ||

Date ______
Page ______

28/02/25

प्रत्याशा → आशा के प्रति आशा
सपत्नी → पत्नी के साथ | सहित
सार्थक → अर्थ पूर्ण | अर्थ सहित
लाजवाब → जिसका कोई जवाब न हो।
* नित्यप्रति → हमेशा होने वाला
दरहकीकत → हकीकत में
नीरोग → बिना रोग के
प्रत्यक्ष → आँखो के सामने (प्रति + अक्ष = अक्षि → आँख)
प्रत्याशा → आशा

पद की पुनरावृत्ति

घर-घर → घर के बाद घर | प्रत्येक घर
एक-एक → एक के बाद एक
दस-दस → दस के बाद दस
गाँव-गाँव - गाँव के बाद गाँव
दिनोदिन → दिन के बाद दिन | प्रत्येक दिन
* रातों-रात → रात ही रात में
हाथो हाथ → हाथ ही हाथ में
बीचों बीच → बीच ही बीच में
मंद-मंद → मंद और भी मंद
कानोकान → कान ही कान में | एक कान से दूसरे कान तक
गली-गली → गली के बाद गली
लूटमलूट → लूट के बाद लूट

कर्मधारय समास

जिस समास में पहला पद विशेषण तथा द्वितीय पद विशेष्य हो, अथवा उपमेय, उपमान का भाव हो, अथवा प्रथम पद द्वितीय पद की विशेषता बताता हो, उसे कर्मधारय समास कहते हैं।

जैसे → नीलकमल → नीला है जो कमल

||श्री||

जिसमें → उपमान

28|02|25

नीलोत्पल → नीला है जो उत्पल | कमल
कालीमिर्च → काली है जो मिर्च
खुशबू → अच्छी है जो बू | गन्ध
बदबू → बुरी है जो बू | गन्ध
सज्जन → अच्छा है जो जन
दुर्जन → बुरा है जो जन
महर्षि → महान है जो ऋषि
महाजन → महान है जो जन
महासागर → महान है जो सागर
महार्णव → महान है जो अर्णव | सागर
अंधकूप → अंधा | गहरा है जो कूप
* अंधविश्वास → अंधा | गहरा है जो विश्वास
अल्पेच्छा → अल्प | कम है जो इच्छा
उड़नतस्तरी → उड़ती है जो तस्तरी
उड़नखटोला → उड़ता है जो खटोला
* कृष्ण सर्प → कृष्ण | काला है जो सर्प
सपूत → अच्छा है जो पूत
कुपुत्र → बुरा है जो पुत्र
दीर्घ संधि | सूक्ति → अच्छी है जो उक्ति | कथन
कटूक्ति → कठोर है जो उक्ति

दीर्घ ← परमात्मा → परम | महान है जो आत्मा
परमाणु → परम | महान है जो अणु
स्वर → दुर्वचन → बुरे है जो वचन
गुण → परमेश्वर → परम | महान है जो ईश्वर

बहुमूल्य → बहुत है जिसका मूल्य
कापुरुष → कायर है जो पुरुष
भलामानस → भला है जो मानस
कृष्ण पक्ष → कृष्ण | काला है जो पक्ष

||श्री||

Date ______
Page ______

28/02/25

महात्मा → महान है जो आत्मा
महाकाव्य - महान है जो काव्य
* तुषार धवल → तुषार | बर्फ के समान सफेद
चन्द्रमुख → चन्द्रमा के समान मुख
* चीलगाड़ी → चील के समान गाड़ी
घनश्याम → घन | बादल के समान श्याम | काला

01/03/2025

कुसुमकोमल → कुसुम | पुष्प के समान कोमल
कमलनयन → कमल के समान नयन
कमलाक्ष → कमल के समान अक्षि | आँख
चन्द्रवदन (मुख) → चन्द्रमा के समान वदन (मुख)
प्राणप्रिय → प्राण के समान प्रिय
लोहपुरुष → लोह के समान पुरुष
मीनाक्षी → मीन के समान अक्षि (आँख)
विद्युच्चंचला → विद्युत के समान चंचल
चरणकमल → कमल रूपी चरण
* देहलता → लता रूपी देह
पदपंकज → पंकज रूपी पद
कर कमल → कमल रूपी कर (हाथ)
हंस गामिनी → हंस के समान चाल
नर केसरी → केसरी | शेर रूपी नर
ग्रंथ-रत्न → रत्न रूपी ग्रंथ
क्रोधाग्नि → अग्नि रूपी क्रोध
संसार सागर → सागर रूपी संसार
सद्बुद्धि → अच्छी है जो बुद्धि
भ्रष्टाचार → भ्रष्ट है जो आचार | व्यवहार
मंदबुद्धि → मंद है जो बुद्धि
मंदाग्नि → मंद है जो अग्नि
शीतोष्ण → शीत है जो उष्ण है जो
लाल - सुर्ख → लाल है जो सुर्ख (गहरा)

|| श्री ||

01|03|25

देवर्षि → देव है जो ऋषि
हरासघन → हरा है जो संघन है जो
पाषाणहृदय → पाषाण के समान हृदय
चरणारविंद → अरविंद (कमल) रूपी चरण
नरशार्दूल → शार्दूल रूपी नर
कीर्तिलता → लता रूपी कीर्ति

द्वन्द्व समास

* जिस समास में दोनों पद प्रधान हो, तथा दोनों के मध्य और अथवा या शब्द का लोप हो या पद एक दूसरे के विपरीत हो उसे द्वन्द्व समास कहते हैं।

Note → ① द्वन्द्व समास में दोनो पद संख्यावाची हो सकते हैं लेकिन संख्या असमान होनी चाहिए।

② Note → 1, 2, 3, 4, 5, 6, 7, 8, 9, 10 / 20, 30, 40, 50, 60, 70, 80, 90, 100 — संख्याओं को छोड़कर

शेष सभी संख्याओं में द्वन्द्व समास ✓
→ बशर्ते : उन / उन्‍ उपसर्ग नहीं होना चाहिए। उन्चालीस, एकदम पानी, अपवाद

② Note → द्वन्द्व समास में पदों के मध्य अधिकांशतः योजक चिह्न का प्रयोग होता है।
जैसे → माता-पिता → माता और पिता
चार-पाँच → चार या पाँच
चालीस-पचास → चालीस से पचास तक
पाँच-सौ → पाँच बार सौ

|| श्री ||

Date
Page

1|02|25

द्वन्द्व समास के भेद

1. इतरेतर → पूरक/सहायक → (और)

2. समाहार → समूह → आदि

3. वैकल्पिक → विपरीत → (या)

↓

माता-पिता → माता और पिता
गौरीशंकर → गौरी और शंकर
राधा कृष्ण → राधा और कृष्ण
सीताराम → सीता और राम
नर-नारी → नर और नारी
भाई-बहन → भाई और बहन
लव-कुश → लव और कुश
इकतीस → एक और तीस
अड़सठ → आठ और साठ
पच्चीस → पाँच और बीस
* अट्ठारह → आठ और दस
तन-मन-धन → तन, मन और धन
लाल-बाल-पाल → लाल, बाल और पाल
रोटी-कपड़ा-मकान → रोटी, कपड़ा और मकान
आन-बान-शान → आन, बान और शान

|| श्री ||

01/2/25

2. समाहार

— * — *

गोला-बारूद → गोला, बारूद आदि
चिट्ठी-पत्री → चिट्ठी, पत्री आदि
कूड़ा-कचरा → कूड़ा, कचरा आदि
कुरता-टोपी → कुरता, टोपी आदि
उछल-कूद → उछल, कूद आदि
धूप-बत्ती → धूप, बत्ती आदि
बाप-दादा → बाप, दादा आदि
साँप-बिच्छू → साँप, बिच्छू आदि
हुक्का-पानी → हुक्का, पानी आदि
साग-पात → साग, पात आदि
फल-फूल → फल, फूल आदि

वैकल्पिक

*

ऊँच-नीच → ऊँच या नीच
लाभ-हानि → लाभ या हानि
पाप-पुण्य → पाप या पुण्य
ठण्डा-गर्म → ठण्डा या गर्म
थोड़ा-बहुत → थोड़ा या बहुत
धर्माधर्म → धर्म या अधर्म
सुरासुर → सुर या असुर
कर्तव्याकर्तव्य → कर्तव्य या अकर्तव्य
गरीब-अमीर → गरीब या अमीर
राजा-रंक → राजा या रंक
अपना-पराया → अपना या पराया

| श्री |

03/03/25

तत्पुरुष समास

जिस समास में प्रथम पद संज्ञा तथा द्वितीय पद प्रधान हो और दोनों के मध्य कारक चिह्न का लोप हो उसे तत्पुरुष समास कहते हैं।
जैसे → रसोई घर → रसोई के लिए घर

कारकों के अनुसार तत्पुरुष समास के 6 भेद होते हैं

(1) कर्म तत्पुरुष समास → को
2) करण तत्पुरुष " → से (सहायता के द्वारा)
3) सम्प्रदान " " → के लिए
4) अपादान " " → से (अलग)
5) सम्बन्ध " " → का, की, के
6) अधिकरण " " → में, पर

(1) कर्म तत्तपुरुष समास →
इस समास में कर्म कारक चिह्न (को) का लोप होता है।
जैसे → यशप्राप्त → यश को प्राप्त
मरणातुर → मरने को आतुर
विरोधजनक → विरोध को जन्म देने वाला
चिड़ीमार → चिड़ी को मारने वाला
* गिरहकट → गाँठ को खोलने वाला / जेब को काटने वाला
* ग्रामगत → ग्राम को गया हुआ।
ग्रामागत → ग्राम को आया हुआ।
गगनचुंबी → गगन को चूमने वाला
तिलकुटा → तिल को कूटकर बनाया हुआ।
स्वर्गगत → स्वर्ग को गया हुआ।
स्वर्गप्राप्त → स्वर्ग को प्राप्त
जेबकतरा → जेब को काटने वाला
घरफूँक → घर को फूँकने वाला

|श्री|

03/03/25

दिलतोड़ → दिल को तोड़ने वाला
कमरतोड़ → कमर को तोड़ने वाली
* शरणागत → शरण को आया हुआ
मुँहतोड़ → मुँह को तोड़ने वाली
चितचोर → चित्त को चुराने वाला
* भण्डाफोड़ → भण्डा (राज़) को फोड़ने वाला

* करण तत्पुरुष समास → इस समास में करण कारक चिह्न (से) का लोप होता है।

जैसे → गुणयुक्त → गुणों (से) युक्त
हस्तलिखित → हाथ (से) लिखित
तुलसीकृत → तुलसी के द्वारा किया हुआ।
ईश्वरदत्त → ईश्वर के द्वारा दिया हुआ।
रत्नजड़ित → रत्नों से जड़ित
आँखोंदेखी → आँखों से देखी
कानोंसुनी → कानों से सुनी
* बैलगाड़ी → बैलों (के द्वारा) से चलने वाली गाड़ी।
* ऊँटगाड़ी → ऊँट (के द्वारा) से चलने वाली गाड़ी
तारोंभरी → तारों से भरी
* भड़भूजा → भाड़ के द्वारा भूजने वाला **
* धर्मांध → धर्म से अन्धा ***
पद-यात्रा → पदों से यात्रा
भूखमरा → भूख से मरा
अकाल पीड़ित → अकाल से पीड़ित
अश्रु पूर्ण → अश्रु से पूर्ण
मुँह माँगा → मुँह से माँगा।
रसभरी → रस से भरी
डण्डीमार → डण्डी से मारने वाला (कम तोलने वाला)
वाग्युद्ध → वाणी से युद्ध
* मुँहबोली → मुँह से बोली

॥ श्री ॥

03/03/25

③ सम्प्रदान तत्पुरुष समास - (इस समास में सम्प्रदान कारक चिह्न (के लिए) का लोप होता है।

→ रसोईघर → रसोई के लिए घर
यज्ञशाला → यज्ञ के लिए शाला
* परीक्षाकेन्द्र → परीक्षा के लिए केन्द्र
हवन सामग्री → हवन के लिए सामग्री
विद्यालय → विद्या के लिए आलय
* डाकगाड़ी → डाक के लिए गाड़ी
मालगाड़ी → माल के लिए गाड़ी
हथकड़ी → हाथ के लिए कड़ी
गुरुदक्षिणा → गुरु के लिए दक्षिणा
भूतबलि → भूत के लिए बलि
* बलिपशु → बलि के लिए पशु
अनाथालय → अनाथों के लिए आलय
आवेदन-पत्र → आवेदन के लिए पत्र
कर्णफूल → कानों के लिए फूल
** कृषि भवन → कृषि सम्बन्धी कार्यों के लिए भवन
कृष्णार्पण → कृष्ण के लिए अर्पण
क्रीड़ाक्षेत्र → क्रीड़ा के लिए क्षेत्र
गोशाला → गायों के लिए शाला
घर खर्च → घर के लिए खर्च
घुड़शाला → घोड़ों के लिए शाला
छात्रावास → छात्रों के लिए आवास
* पितृदान → पितरों की शांति के लिए दान
प्रौढ़शिक्षा → प्रौढ़ों के लिए शिक्षा
महँगाई भत्ता → महँगाई के लिए भत्ता
रणभूमि → रण के लिए भूमि
रंगमंच → रंग (नाटक आदि) के लिए मंच
रेल भाड़ा → रेल के लिए भाड़ा

|श्री|

Date
Page

03|03|25

रोकड़बही - रोकड़ के लिए बही
सत्याग्रह → सत्य के लिए आग्रह

④ अपादान तत्पुरुष समास → इस समास में अपादान कारक चिह्न (से) का लोप होता है।
पदमुक्त → पदों से मुक्त
पदच्युक्त → पद से च्युत। मुक्त
धनहीन → धन हीन से हीन
नेत्रहीन → नेत्र से हीन
* जन्मान्ध → जन्म से अन्धा
देशनिकाला → देश से निकाला
पथ भ्रष्ट → पथ से भ्रष्ट
जाति भ्रष्ट → जाति से भ्रष्ट
अपराध मुक्त → अपराध से मुक्त
आकाशवाणी → आकाश से वाणी
ऋणमुक्त → ऋण से मुक्त
* कामचोर → काम से जी चुराने वाला।
गुणरहित → गुणों से रहित
जात-बाहर - जात से रहित
दूरदर्शन - दूर से दर्शन
देश निकाला - देश से निकाला
पापरहित - पापों से रहित
भयभीत - भय।डर से भीत।डरा हुआ।

⑤ (E) सम्बन्ध तत्पुरुष समास - इस समास में सम्बन्ध कारक चिह्न (का, की, के) का लोप होता है।
घुड़दौड़ → घोड़ों की दौड़
राजमाता → राजा की माता
* राजसभा → राजा की सभा

| श्री |

04/03/25

नगर सेठ → नगर का सेठ
भारतवासी → भारत के वासी
चरण सीमा → चरणों की सीमा
मंत्रिपरिषद → मंत्रियों की परिषद
* कन्यादान → कन्या का दान
जीवन साथी → जीवन का साथी
* मृग छौना → मृग का छौना | बच्चा
सेहरा बंधाई → सेहरा बाँधने की भेंट
नरबलि → नर की बलि
पशुबलि → पशु की बलि
अश्वमेध → अश्व का मेध | बलिदान
अमचूर → आम का चूर | चूरण
अमृतधारा → अमृत की धारा
ऋषिकन्या → ऋषि की कन्या
करोड़पति → करोड़ों (धन) का पति (स्वामी)
गंगाजल → गंगा का जल
गोदान → गाय का दान
चर्मरोग → चर्म का रोग
जमींदार → जमीन का दार | मालिक
दयासागर → दया का सागर
दुख सागर → दुख का सागर
दीनानाथ → दीनों का नाथ
देशभक्ति → देश की भक्ति
पराधीन → पर (दूसरे) के अधीन
प्राणदान → प्राण का दान
पूँजीपति → पूँजी | धन का पति | स्वामी
भाग्यविधाता → भाग्य का विधाता
भारत रत्न → भारत का विधाता रत्न
मृगशावक → मृग का शावक | बच्चा
मुहँ दिखाई → मुँह की दिखाई

|श्री|

Date
Page

04/08/25

रक्तदान → रक्त का दान
रामचरित → राम का चरित
राजभाषा → राज्य की भाषा
राष्ट्रपिता → राष्ट्र का पिता
सेनाध्यक्ष → सेना का अध्यक्ष
सौरमण्डल → सौर का मण्डल

अधिकरण तत्पुरुष समास

→ इस समास में अधिकरण कारक चिह्न (में, पर) का लोप होता है।

घुड़सवार → घोड़े पर सवार
जलमग्न → जल में मग्न
युद्धरत → युद्ध में रत | लीन
आपबीती → आप | स्वयं पर बीती
देशाटन → देश में भ्रमण
कविपुंगव → कवियों में पुंगव | श्रेष्ठ
दहीबड़ा → दही में डूबा हुआ बड़ा
** रेलगाड़ी → रेल | पटरी पर चलने वाली गाड़ी
अश्वारूढ़ → अश्व पर आरूढ़ | सवार
अश्वारोहण → अश्व पर आरोहण | सवार
आत्मविश्वास → आत्म पर | स्वंय पर विश्वास
कविवर → कवियों में वर | श्रेष्ठ
कर्त्तव्यनिष्ठ → कर्त्तव्य में निष्ठा
कूपमंडूक → कूप में मण्डूक
नरोत्तम → नरों में उत्तम
नीतिनिपुण → नीति में निपुण
पराश्रित → पर | दूसरे पर आश्रित
पुरुषोत्तम → पुरुषों में उत्तम
पेटदर्द → पेट में दर्द
भूमिगत → भूमि में गया हुआ
मुनिश्रेष्ठ → मुनियों में श्रेष्ठ

|श्री|

Date
Page

04/03/25

लोकप्रिय → लोक में प्रिय
वनवास → वन में वास
व्यवहार कुशल → व्यवहार में कुशल
** हरफ़नमौला → प्रत्येक फ़न। कार्य में मौला। दक्ष

Imp

तत्पुरुष समास के अन्य भेद (4)

अलुक् तत्पुरुष तत्पुरुष | नञ तत्पुरुष | उपपद | लुप्तपद

(अ) अलुक् तत्पुरुष → जिस समास में कारक की विभक्ति का (पूरी) तरह लोप (नहीं) होता, उसे (अलुक्) तत्पुरुष कहते हैं।

example →

मनसिज (मनसि + ज) → मन में सृजित होने वाला
अन्तेवासी (अन्ते + वासी) → समीप में वास करने वाला
वाचस्पति - (वाचस् + पति) → वाणी का पति
युधिष्ठिर - (युद्ध + स्थिर) → युद्ध में स्थिर रहने वाला
धनंजय - (धनम् + जय) → धन (कुबेर) को जय करने वाला
धुरंधर - (धुरम् + धर) → धुरी में विचरण करने वाला
* खेचर (खे + चर) → आकाश में विचरण करने वाले
वनेचर (वने + चर) → वन में विचरण करने वाला।

(2) नञ तत्पुरुष समास → इस समास में पूर्वपद संस्कृत का (अ), (अन्), तथा (उर्दू) का (ना) उपसर्ग होते हैं। जो नकारात्मक अर्थ प्रकट करते हैं।

| श्री |

04/03/25

अनश्वर → न नश्वर होने वाला।
अमिट → न मिटने वाला।
अधीर → न धीर रखने वाला।
अव्यय → न व्यय होने वाला।
अमर → न मरने वाला।
नापाक → नहीं है पाक जो
नापसंद – नहीं है पसंद जो
असभ्य – नहीं है सभ्य जो
अनासक्त – आसक्ति से रहित
नालायक – नहीं है लायक जो
* नागवार – नहीं है गवारा (मंजूर) जो
* अनसन – असन (भोजन) से रहित।

(3) उपपद तत्पुरुष समास → जब समस्त पद में उत्तर पद कोई स्वतन्त्र सार्थक शब्द न हो कर कोई प्रत्यय होता है तब उपपद तत्पुरुष समास होता है।

यथा :→

पादप → पाद (पैर) से पीने वाला
स्वर्णकार – स्वर्ण का काम करने वाला
खग – ख (आकाश) में गमन करने वाला
चर्मकार → चर्म का काम करने वाला
जलचर → जल में विचरण करने वाला
नभचर → नभ में विचरण करने वाला
जलज → जल में जन्म लेने वाला (बहुव्रीहि)
सुखदायी → सुखदायी को देने वाला
कृतज्ञ → कृत (उपकार) को मानने वाला
शक्तिदायक → शक्ति को देने वाला
जलद → जल को देने वाला
लाभप्रद → लाभ को प्रदान करने वाला।
राजनीतिज्ञ → राजनीति को जानने वाला
कठफोड़ता → काठ को फोड़ने वाला

|श्री|

05/03/25

(द) (4) लुप्त पद तत्पुरुष समास → इसमें कारकीय चिह्नों के साथ-साथ अन्य पद भी लुप्त हो जाते हैं, तब लुप्त तत्पुरुष समास माना जाता है।

उदाहरण → पर्णशाला → पर्ण (घास, तिनका) से बनी हुई शाला *
पवन चक्की → पवन से चलने वाली चक्की
रसगुल्ला → रस में डूबा हुआ गुल्ला
दहीबड़ा → दही में डूबा हुआ बड़ा
तुलादान → तुला से बराबर दिया जाने वाला दान
वनमानुष → वन में रहने वाला मानुष
* गुरु भाई → एक ही गुरु से पढ़ा हुआ शिष्य या गुरु का पुत्र
बैलगाड़ी → बैल से चलने वाली गाड़ी
मालगाड़ी → माल को ढोने वाली गाड़ी
मधुमक्खी → मधु को एकत्र करने वाली मक्खी
स्वर्णहार → स्वर्ण से बना हार
अश्रुगैस → अश्रु को लाने वाली गैस
रेलगाड़ी → रेल पर चलने वाली गाड़ी

द्विगु समास

जिस समास में एक पद संख्यावाची हो और दोनों पद मिलकर किसी समूह या समुदाय का बोध कराते हो उसे द्विगु समास कहते हैं।

जैसे → द्विगु → दो गायों का समूह | समाहार
दोपहर → दो पहरों का समूह
दुपट्टा → दो पटों का समूह
* दुनाली → दो नलियों का समूह
त्रिफला → तीन फलों का समूह
त्रिभुजा → तीन भुजाओं का समूह
* त्रिवेणी → तीन वेणियों का समाहार (चोटी महिलाओं की)

| श्री |

Date
Page

05/03/25

त्रिकोना → तीन कोनों का समूह
त्रिकाल → तीन कालों का समूह
त्रिलोक → तीन लोकों का समूह
* त्रिभुवन → तीन लोकों का समाहार **
त्रिगुण → तीन गुणों का समूह
चौराहा → चार राहों का समाहार
चतुर्वेदी → चार वेदों का ज्ञाता
चौपाल → चार पालों का समूह
चवन्नी → चार आनों का समाहार | समूह
चौमासा → चार मासों का समाहार
चतुष्पदी → चार पदों का समाहार
चौकोर → चार कोरों का समूह
पंचवटी → पाँच वटों का समूह
पंजाब → पाँच नदियों का समाहार
पंचतन्त्र → पाँच तन्त्रों का समूह
पंचरंगा → पाँच रंगों का समूह
पंचपात्र → पाँच पात्रों का समूह
पंसेरी → पाँच सेरों का समूह
पंचामृत → पाँच अमृतों का समाहार
षड्ऋतु → छह ऋतुओं का समूह
षण्मास → ~~छह महिनों~~ महीनों का समूह
षड्गुण → छह गुणों का समूह
षड्भुजा → छह भुजाओं का समूह
सप्तर्षि → सात ऋषियों का समूह
सप्ताह → सात दिनों का समूह
* सतसई → सात सौ दोहों का समूह
सतरंग → सात रंगों का समूह
अष्टाध्यायी → आठ अध्यायों का समूह
अष्टभुज → आठ भुजाओं का समाहार
अठवारा → आठवें दिन होने वाला
अष्टधातु → आठ धातुओं का समूह

05/03/25

नौगाँव → नौ गाँवों का समूह
नवग्रह → नौ ग्रहों का समाहार
नवरत्न → नौ रत्नों का समूह
नवरात्र → नौ रात्रियों का समूह
शताब्दी → सौ वर्षों का समाहार
सतसई → सात सौ दोहों का समूह

बहुव्रीहि समास

→ जिस समास में दोनों पदों की प्रधानता न होकर अन्य पद की प्रधानता हो।
→ जो अपने पद के अर्थ को छोड़कर → लाक्षणिक अर्थ देता हो।
→ पद अद्वितीय हो।

जैसे → नाकपति → स्वर्ग का स्वामी है जो वह (इन्द्र)
वक्रतुण्ड → वह जिसका मुँह टेढ़ा है (गणेशजी)
चन्द्रचूड़ → वह जिसके सिर पर चन्द्रमा है (शिव जी)
चन्द्रमौलि → ,, ——— ,,
चन्द्रशेखर → ,, ———
शशिभूषण → चन्द्रमा ही आभूषण है जिसका वह (शिवजी)
आशुतोष → वह जो शीघ्र प्रसन्न होता है (शिवजी)
नीलकण्ठ → नीला है कण्ठ जिसका वह (शिवजी)
त्रिनेत्र → तीन नेत्र हैं जिसके वह (,,)
त्रिलोचन ——— ,, ———
* गुडाकेश → नींदों का स्वामी है जो वह (शिवजी, अर्जुन)
* श्रीश → लक्ष्मी का पति है जो वह (विष्णु)
कमलेश ,, ——— ,, ——— ,,
रमेश → ,, ,, ———
हृषीकेश → इन्द्रियों का स्वामी है जो वह (विष्णुजी)

| श्री |

05/03/25

पीताम्बर → पीले वस्त्र हैं जिसके वह (कृष्णजी, विष्णुजी)
चतुर्भुज → चार भुजाएँ हैं जिसकी वह (ब्रह्मा, विष्णु)
* शशांक → वह जिसकी गोद में खरगोश है (चन्द्रमा)
* मनोज → मन में जन्म लेता है जो वह
रतिपति → रति( ) का पति है जो वह (कामदेव)
शचीपति → शची का पति है जो वह (इन्द्र)
पुलोमजा → पुलोम नामक राक्षस की पुत्री है जो वह (शचि)
* रेवतीरमण → रेवती के साथ भ्रमण करता है जो वह (बलराम)
हलधर → हल को धारण करता है जो वह (बलराम)
नीलाम्बर → नीले वस्त्र हैं जिसके वह (बलराम)
* मुरारि → मुर नामक राक्षस का शत्रु है जो वह (कृष्ण)
गिरिधर → गिरी को धारण किया था जिसने (कृष्ण)
नन्दनन्दन → नन्द का नन्दन है जो वह (कृष्ण)
गोपाल → गायों को पालता है जो वह (कृष्ण)
दशानन → दस हैं आनन जिसके
षडानन → छः आनन हैं जिसके वह (कार्तिकेय)
षण्मुख → छह मुख हैं जिसके वह (,,)
गजानन → गज का आनन है जिसका वह (गणेशजी)
भूतेश → भूतों का स्वामी है जो वह (शिवजी)
* आदित्यसूनु → सूर्य का पुत्र है, जो वह (कर्ण)
चक्षुश्रुवा → नेत्रों से सुनता है जो वह (सांप)
पीताम्बर
↳ बालक पीताम्बर में सुशोभित हो रहा है। → कर्मधारय
↳ पीताम्बर सूख रहे हैं → कर्मधारय
→ मैं बंशीधर का भक्त हूँ → बहुव्रीहि

चतुर्भुज → आयत भी एक चतुर्भुज होता है → द्विगु
नीलकण्ठ → शिवजी का नीलकंठ विषपान से हुआ → कर्मधारय
त्रिलोचन → शिवजी के त्रिलोचन से कामदेव काँप उठा → द्विगु।
त्रिनेत्र → त्रिनेत्र के त्रिनेत्र से कामदेव काप उठा।
बहु द्विगु

|श्री|

5

Date
Page

08/03/25

~~सन्धि~~

उपसर्ग

→ वे शब्दांश जो मूल शब्द से पहले जुड़कर उनके अर्थ में परिवर्तन कर देते हैं। या विशेषता ला देते हैं।

जैसे → दुरव्यवहार
⇓ दुर् वि अव हार
① ② ③

अव्यवस्था → अ वि अव स्था
① ② ③

अस्वाभाविक → अ स्व भाव इक
① ② ①

अप्रत्याशित → अ प्रति आशा इत
① ② ①

सही
अत्यन्त
प्रत्याशा
स्वागत
पर्यावरण
अन्वेषण
संसार
उद्धार

[आध्यात्म ⊗ → अधि + आत्म
वागिश ⊗ | वागीश ✓ अध्यात्म ✓]

* उपसर्ग के भेद → ③
(1) संस्कृत के उपसर्ग – 22
2) हिन्दी के उपसर्ग
3) विदेशी उपसर्ग

* संस्कृत के उपसर्ग → अव, अप, अति, अधि, अभि, अपि, अनु, आ – ⑧
उत्, उप → ②
दुर्, दुस् → ②
नि, निर्, निस् → ③
प्र, प्रति, परा, परि → ④
वि → ①
सु, सम् ②

|श्री|

Date
Page

07/03/25

* संस्कृत के उपसर्ग

	उपसर्ग	अर्थ	यौगिक शब्द
1. →	अव	बुरा →	अवगुण, अवतार, अवनति, अवधारणा, अवशेष
2. →	अप	बुरा/विपरीत →	अपमान, अपकीर्ति, अपशय अपशब्द, अपशकुन
3 →	अति	अधिक →	अत्यधिक, अत्युक्ति, अत्यन्त, अतिरिक्त, अतिक्रमण (अति क्रम अन)
4.	अधि	ऊपर/श्रेष्ठ →	अध्यक्ष, अध्यादेश, अध्यात्म अधिकारी, अधिनियम, अधिसूचना
5.	अभि	पास/सम्मुख →	अभ्यर्थी, अभ्युदय, अभीष्ट अभिमान, अभिभाषण
6	अपि	भी →	आपिहित, अपिधान (ढक्कन) (ढका हुआ)
7.	अनु	पीछे →	अन्वय, अन्वेषण, अनुच्छेद अनुशासन, अनुकरण
8.	आ →	तक/सीमा →	आजीवन, आमरण, आरक्षण, आहार

* ———

1.	उत्	ऊपर/श्रेष्ठ →	उन्नति, उल्लेख, उद्धार, उच्चासन, उज्ज्वल
2.	उप	पास/समीप →	उपसर्ग, उपवन, उपहार, उपदे

|श्री|

07|03|25

1.	दुर्	बुरा|कठिन	→ दुरवस्था, दुरुपयोग, दुर्घटना दुराशा, दुर्दिन, दुर्गति, दुर्जन
2.	दुस्	बुरा|कठिन	→ दुश्शासन, दुष्फल, दुस्साहस [श ष स् → स्]
1.	नि	अभाव|रहित	→ न्यून, न्याय, न्यास, निबन्ध, निडर (नि+ऊन) नि+आय) नि+आस
2.	निर्	अभाव|रहित	→ निराशा, निराहार, निरर्थक, निर्जन निरपराध, निर्धन, निर्मल, निर्बल
3.	निस्	अभाव रहित	→ निश्चिंत, निष्फल, निस्तेज, निश्छल [श ष स् → स]
1.	प्र	प्रबल	→ प्रबल, प्रगति, प्रचार, प्रसार प्रमाण, (मान|नाम)
2.	प्रति	प्रत्येक|विपरीत	→ प्रत्येक, प्रत्याशा, प्रतिदिन, प्रतिकूल, प्रतिध्वनि
3.	परा	उल्टा	→ पराजय, पराभव, पराक्रम, पराकाष्ठा
4.	परि	चारों ओर	→ पर्यावरण, पर्यटन, परिक्रमा (परिक्रम ड परिपूर्ण, परिमाण, परिणाम
1.	वि →	विशेष|भिन्न	→ व्यय, व्याधि, व्यायाम, विजय, विख्यात, विशेष, विदेश, वीक्षण
1.	सु →	अच्छा	→ स्वागत, स्वच्छ, सुपुत्र, सुगन्ध, सुमन, सुशील
2.	सम् →	अच्छी तरह	→ संसार, संवाद, संज्ञा, संयुक्त, संलग्न, समाचार, सम्मुख

|श्री|

Date ______
Page ______

08/03/25

अव्यय के उदा॰

उपसर्ग	अर्थ	यौगिक शब्द
1. अन्	अभाव / रहित	अनुचित, अनुपमा, अनिच्छा, अनुपस्थित, अनंत, अनिष्ट अनाधिकार, अनभ्यास, अनुत्तरित, अनुदात्त, अनुदयत, अनभिज्ञ, अनारंभ।
2. अधः	नीचे	अधःपतन, अधोगति, अधोमुख, अधोगामी, अधोगमन, अधोहस्ताक्षर, अधोगत।
3. अंतर्	भीतर / मध्य	अंतरात्मा, अन्तर्गति, अन्तर्जातीय, अंतर्ज्वाला, अंतर्दृष्टि, अतः करण।
4. अंतर	के मध्य	अंतरराष्ट्रिय, अंतरदेशीय, अंतरजातीय, अंतरदृतीय, अंतरराज्यीय
5. अलम्	सज्जित	अलंकार, अलंकरण, अलंकृत, अलंकृति।
6. तिरः	तुच्छ	तिरस्कार, तिरोधान, तिरोहित, तिरस्कृत, तिरोभाव
7. पुनर्	फिर	पुनरपि, पुनरागत, पुनरागम, पुनरावृत पुनरुत्थान, पुनर्जन्म।
8. पूर्व	पहला / पहले	पूर्वकालिक, पूर्वाधिकार, पूर्वज, पूर्वधारणा, पूर्वपद, पूर्वदिशा
9. पुरा	प्राचीन	पुराकथा, पुरातत्व, पुरालिपि, पुरालेख, पुरातन, पुराविद्

| श्री |

08/03/25

9. प्राक् → पहले का → प्राक्कथन, प्राक्कलन, प्राक्काल, प्राकृत, प्राग्ज्योतिष, प्राग्वचन

10 बहिः बाहर → बहिर्गमन, बहिर्गामी, बहिष्करण, बहिष्कार, बहिष्कृत, बहिर्मुख।

11. सत श्रेष्ठ|अच्छा → सत्कथा, सत्कार, सत्कर्म, सद्भाव, सदाचार, सत्पंथ, सद्ग्रंथ

12. सह → साथ → सहकार, सहकर्मी, सहचर, सहमत सहयात्री, सहयोग, सहमति।

* हिन्दी के उपसर्ग

* *

उपसर्ग	अर्थ	यौगिक शब्द
1. → अ	अभाव|रहित	→ अभाव, अखण्ड, अज्ञान, अजर, अमर
2. अन	अभाव|रहित	→ अनपढ़, अनमोल, अनजान, अनबन, अनहोनी।
3. कु	बुरा	→ कुख्यात, कुपुत्र, कुरीति, कुकर्म, कुमार्ग, कुसल, कुसुम
4. भर	पूरा	→ भरपेट, भरपाई, भरमार, भरसक
5. अध	आधा	→ अधमरा, अधपका, अधजला, अधखिला, अधकच्चरा

|श्री|

08/03/25

बिन → बिना → बिनखाया, बिनबोया, बिनबुलाया, बिनमाँगा।

स → सहित/अच्छा → सहित, सपूत, सफल, सबल, सादर

सम → समान → समतल, समकक्ष, समकालीन, समकोण
(शम → शान्ति
सम → सम्मान)

उ → ऊँचा → उखड़ना, उगाना, उछलना, उछालना, उजला, उलाँघना।

* उन/उन → एकक्रम → उन्नीस, उनतीस, उनचालीस, उनंचास, उनसठ, उन्हतर।

* औ → बुरा, नीचे → औगुन, औघट, औघड़, औसान, औजाड़।

का/कु → बुरा/कठिन → कपूत, कुटेव, कुठौर, कुचाल, ~~कुरू~~ कुतरक, कुतार

चौ → चार → चौखाना, चौगान, चौपाई, चौरंगा, चौसर।

ति, तीन → तिकोना, तिगुना, तिमाही, तिपाई, तिराहा, तिरंगा।

दु → दो → दुगुना, दुमट, दुभाँत, दुभाषिमी दुधारू, दुरंगा।

|श्री|

08|03|25

पर → दूसरा → परकाज, परदादा, परपोता, परदुर, परदेश, परधरम।

विदेशी उपसर्ग*

बे → अभाव|रहित → बेघर, बेईमान, बेइज्जत, बेसहारा, बेवफा, बेपनाह

खुश अच्छा खुशबू, खुशकिस्मत, खुशमिजाज, खुशखबरी, खुशनसीब

बद बुरा बदबू, बदनाम, बदसूरत, बदनसीब, बदमिजाज।

ला अभाव|रहित → लाइलाज, लाजबाब, लापता, लावारिस, लापरवाह।

ना नहीं → नाराज, नाउम्मीद, नापसन्द, नालायक, नाजायज

हर प्रत्येक → हरपल, हरघड़ी, हरवक्त, हररोज, हरसाल

हम साथ → हमशक्ल, हमसफर, हमराज, हमदर्द, हम वतन।

गैर → अभाव|रहित → गैरहाजिर, गैरकानूनी, गैरकौम

अल → निश्चित → अलकायदा, अलबेला, अलबत्ता, अलमस्त, अलविदा, अलगरजी।

श्री

CLASSMATE
Date
Page

08/03/25

कम → कम → कमअक्ल, कमउम्र, कमकस, कमज़ोर, कमबख्त, कमखर्च।

बा → साथ, अनुसार → बाअदब, बाइज्जत, बाउसूल, बाईमान, बाकायदा, बामुराद।

दर → में अन्दर → दरअसल, दरकिनार, दरखास, दरमियान, दरहकीकत।

सर → ऊँचा, अच्छा → सरताज, सरदार, सरनाम, सरकार, सरफ़रोश, सरहद।

Date ______
Page ______

प्रत्यय

प्रत्यय → वे शब्दांश जो मूल शब्द के अन्त में जुड़कर उनके अर्थ में परिवर्तन कर देते हैं। प्रत्यय कहलाते हैं।

प्रत्यय के भेद → ②

(1) कृत प्रत्यय → धातु | क्रिया → कृदन्त → ⑤

(2) तद्धित प्रत्यय → संज्ञा | सर्वनाम | विशेषण → तद्धितान्त → ⑥

* कृत प्रत्यय → वे प्रत्यय जो धातु | क्रिया के अन्त में जुड़कर नवीन शब्दों का निर्माण करते हैं। कृत प्रत्यय कहलाते हैं। इनसे बनने वाले पदों को कृदन्त कहते हैं।

भेद → ① कर्तृ वाचक कृत प्रत्यय

2. कर्म वाचक कृत प्रत्यय

3. करण वाचक कृत प्रत्यय

4. भाव वाचक कृत प्रत्यय

5. क्रिया वाचक कृत प्रत्यय

श्री

Date
Page

17/03/25

① कर्तृ वाचक कृत प्रत्यय → वे कर्तृ कृत प्रत्यय जो धातु | क्रिया के अन्त में जुड़कर कर्ता वाचक शब्दों का निर्माण करते हैं। कर्तृ वाचक कृत प्रत्यय कहलाते हैं।

जैसे- अक → धावक, रक्षक, भक्षक, चालक, पालक, मारक

(ii) ता → दाता, ज्ञाता, वक्ता, श्रोता

(iii) हार → लेनहार, देनहार, पालनहार, राखनहार

iv) अक्कड़ → घुमक्कड़, भूलक्कड़, पियक्कड़, कुदक्कड़

(v) वाला → ~~सब्जीवाला~~, ~~दूधवाला~~ पढ़नेवाला, लिखनेवाला, खेलनेवाला, दौड़ने वाला

② कर्मवाच्य कृत प्रत्यय → वे कृत प्रत्यय जो धातु | क्रिया के अन्त में जुड़कर कर्मवाचक शब्दों का निर्माण करते हैं, कर्म वाचक कृत प्रत्यय कहलाते हैं।

जैसे (ना) → दाना, खाना, गाना

औना → खिलौना, बिछौना

श्री

17/03/25

③ करण वाचक कृत प्रत्यय → वे कृत प्रत्यय जो क्रिया के अन्त में जुड़कर क्रिया के साधन का निर्माण करते हैं करण वाचक कृत प्रत्यय कहलाते हैं।

उदा→ आ → झूला, मेला

नी → लेखनी, कतरनी, छलनी, धौंकनी

अन → बेलन, ढक्कन

④ भाव वाचक कृत प्रत्यय → वे कृत प्रत्यय जो क्रिया के अन्त में जुड़कर भाव वाचक संज्ञा का निर्माण करते हैं, भाववाचक कृत प्रत्यय कहलाता है।

उदा→ आई → भलाई, बुराई, पढ़ाई, लिखाई, लड़ाई, चढ़ाई

आवा → बुलावा, चढ़ावा, चलावा, दिखावा, भुलावा

आवट → सजावट, बनावट, रुकावट, थकावट, लिखावट

आहट → घबराहट, गुर्राहट, बिलबिलाहट, मुस्कराहट

⑤ क्रिया वाचक कृत प्रत्यय → क्रिया वाचक शब्दों का निर्माण करते हैं।

श्री

17/03/25

(5)

ता → पढ़ता, लिखता, खाता, पीता, सोता

कर → पढ़कर, लिखकर, खाकर, जाकर, पीकर

या → आया, खाया, पीया, गया

अन्य उदाहरण

→ आऊ → (उड़ा/ना) ~~उड़ना~~, उड़ाऊ, खाऊ, गिराऊ, चलाऊ,
जलाऊ, टिकाऊ, जुझाऊ, दिखाऊ, बिकाऊ

ऐया → कटैया, खिवैया, गवैया, परोसैया, बचैया,
बजैया, भरैया, रखैया, रचैया

* इयल → अड़ियल, सड़ियल, मरियल, बढ़ियल

* एरा → कमेरा, झलेरा

* ऐत → चढ़ैत, टिकैत, फिकैत, लड़ैत

* ओड़ा → भगोड़ा, मरोड़ा, हँसोड़ा

* हारा → सेवनहारा, खेवनहार, तारणहारा, देवनहारा,

* नी → ओढ़नी, चटनी, कहानी, सूँघनी

* अन → खुरचन, जामन, बंधन, मंथन

* अत → खपत, चाहत, चलत, बचत, रंगत

श्री

17/03/25

अंत → गढंत, रटंत, लिपटंत

आई → कटाई, खुदाई, जुताई, सिंचाई

आन → उठान, उड़ान, ढलान, पकान, मिलान

आव → घुमाव, जमाव, चढाव, पड़ाव, बहाव, खिंचाव

औती → कटौती, चुनौती, फिरौती।

तद्धित प्रत्यय → संज्ञा | सर्वनाम | विशेषण के अन्त में जुड़कर नवीन शब्दों का निर्माण करते हैं। इससे बनने वाले पदों को तद्धितान्त कहते हैं।

* तद्धित प्रत्यय के भेद ⑥

(1) कर्तृ वाचक तद्धित प्रत्यय

2) भाव वाचक तद्धित प्रत्यय

3) गुण वाचक तद्धित प्रत्यय

4) सम्बंध वाचक तद्धित प्रत्यय

5) न्यूनता वाचक तद्धित प्रत्यय

(6) स्त्रीबोधक तद्धित प्रत्यय

श्री

18/03/2025

① कर्तृ वाचक तद्धित प्रत्यय

संज्ञा, सर्वनाम, या विशेषण के अन्त में जुड़कर कर्त्ता वाचक शब्दों का निर्माण करने वाले प्रत्यय कर्तृ वाचक तद्धित प्रत्यय कहलाते हैं।

जैसे → [आर] → सुनार (सोना + आर), लुहार (लोहा + आर)

गँवार (गाँव + आर), कुम्हार (कुम्भ + हार)

2. [ची] → अफीमची, नकलची, खजानची, लालची (लालच + ई)

3. [इया] सुखिया, दुखिया, मुखिया, रसिया

4. [वाला] सब्जीवाला, दूधवाला, मिठाईवाला, घरवाला,

5. [हारा] लकड़हारा, पनिहारा

② भाववाचक तद्धित प्रत्यय → संज्ञा / सर्वनाम या विशेषण के अन्त में जुड़कर भाव वाचक संज्ञा का निर्माण करने वाले प्रत्यय भाव वाचक तद्धित प्रत्यय कहलाते हैं।

उदा → [आई] → भलाई, बुराई, अच्छाई, ऊँचाई

[ता] → सुन्दरता, मधुरता, दासता, मित्रता, मानवता

[त्व] → अपनत्व, गुरुत्व, व्यक्तित्व, लघुत्व, बन्धुत्व

श्री

Date ____
Page ____

18/03/25

[पन] → बचपन (बच्चा), लड़कपन (लड़का), अपनापन
भोलापन, पागलपन

(ई) → खुशी, सफेदी, लाली, गर्मी, सर्दी

③ गुणवाचक तद्धित प्रत्यय - संज्ञा, सर्वनाम और विशेषण के अन्त में जुड़कर गुणवाचक शब्दों का निर्माण करने वाले प्रत्यय, गुणवाचक तद्धित प्रत्यय कहलाते हैं।

आलु → दयालु, कृपालु, ईर्ष्यालु, शंकालु, श्रद्धालु
समझालु (समझना)

[ईन] → नमकीन, कुलीन, नवीन, ग्रामीण, (ग्राम + ई

(मान/वान) → शक्तिमान, बुद्धिमान, धनवान, बलवान,
दयावान

④ सम्बन्ध वाचक तद्धित प्रत्यय → संज्ञा/सर्वनाम/विशेषण के अन्त में जुड़कर सम्बन्ध वाचक शब्दों का निर्माण करने वाले प्रत्यय सम्बन्ध वाचक प्रत्यय कहलाते हैं।

(इक) प्रत्यय

नियम (1) यदि मूल शब्द के प्रथम वर्ण में कोई भी मात्रा नहीं है तो आ (ा) की मात्रा लगाते हैं। अर्थात प्रथम (अ) को (आ) में बदलते हैं। फिर इक प्रत्यय जोड़ते हैं।

श्री

Date
Page

13/03/25

जैसे → धर्म + इक → धार्मिक
प्रथम + इक → प्राथमिक
वर्ष + इक → वार्षिक
मध्यम + इक → माध्यमिक
समाज + इक → सामाजिक
समास + इक → सामासिक
संसार + इक → सांसारिक
व्यवहार + इक → व्यावहारिक
व्यवसाय + इक → व्यावसायिक
स्वभाव + इक → स्वाभाविक
काया + इक → कायिक
परिश्रम + इक → पारिश्रमिक
प्रकृति + इक → प्राकृतिक
रसायन + इक → रासायनिक
अंश + इक → आंशिक
आस्ति + इक → आस्तिक
अंतर + इक → आंतरिक
अंचल + इक → आंचलिक
अध्यात्म + इक → आध्यात्मिक
कर्म + इक → कार्मिक
कल्पना + इक → काल्पनिक
चरित्र + इक → चारित्रिक
तंत्र + इक → तांत्रिक
प्रदेश + इक → प्रादेशिक
प्रमाण + इक → प्रामाणिक
प्रयोग + इक → प्रायोगिक
परस्पर + इक → पारस्परिक
* परलोक + इक → पारलौकिक
परितोष + इक → पारितोषिक
प्रसंग + इक → प्रासंगिक

| श्री |

classmate
Date
Page

18|03|25

मर्म + इक → मार्मिक

यंत्र + इक → यांत्रिक

लक्षण + इक → लाक्षणिक

षण्मास + इक → षाण्मासिक

समूह + इक → सामूहिक

सम्प्रदाय + इक → साम्प्रदायिक

समुदाय + इक → सामुदायिक

सर्वजन + इक → सार्वजनिक

आरम्भ + इक → आरम्भिक

न्याय + इक → न्यायिक

मास + इक → मासिक

राजनीति + इक → राजनीतिक

व्यवहार + इक → व्यावहारिक

साहस + इक → साहसिक

सर्वनाम + इक → सार्वनामिक

शरीर + इक → शारीरिक

श्री

18/03/25

शब्द + इक → शाब्दिक

अर्थ + इक → आर्थिक

परिवार + इक → पारिवारिक

** मनस् + इक → मानसिक

अपवाद

धन + इक → धनिक
पथ + इक → पथिक
रस + इक → रसिक
क्षण + इक → क्षणिक
श्रम + इक → श्रमिक

इक प्रत्यय ।

नियम (II) यदि मूल शब्द के प्रथम वर्ण में (इ|ई|ए) की मात्रा हो तो पहले इन्हे ऐ (ै) की मात्रा में बदला जाता है, फिर इक प्रत्यय जोड़ते हैं।

जैसे विज्ञान + इक → वैज्ञानिक

विचार + इक → वैचारिक

विहार + इक → वैहारिक

इतिहास + इक → ऐतिहासिक

इच्छा + इक → ऐच्छिक

श्री

18/03/25

इन्द्रजाल + इक → ऐन्द्रजालिक (जादूगर)
नीति + इक → नैतिक
दिन + इक → दैनिक
जीव + इक → जैविक
सिद्धांत + इक → सैद्धांतिक
वेद + इक → वैदिक
शिक्षण + इक → शैक्षणिक
देव + इक → दैविक
देह + इक → दैहिक
सेना + इक → सैनिक
निमित्त + इक → नैमित्तिक
निष्ठा + इक → नैष्ठिक
विकल्प + इक → वैकल्पिक
विधान + इक → वैधानिक
शिक्षा + इक → शैक्षिक
वेतन + इक → वैतनिक

अपवाद → व्यक्ति + इक = वैयक्तिक

इक प्रत्यय नियम (III) यदि मूल शब्द के प्रथम वर्ण में उ/ऊ/ओ की मात्रा है तो पहले इन्हें औ की मात्रा में बदलते हैं फिर इक प्रत्यय जोड़ते हैं।

जैसे
भूत + इक → भौतिक
उद्योग + इक → औद्योगिक
उपचार + इक → औपचारिक
उपनिबद्ध + इक → औपनिबद्धिक
उपन्यास + इक → औपन्यासिक
पुराण + इक → पौराणिक
मुख + इक → मौखिक
मूल + इक → मौलिक

श्री

19/03/25

भूमि + इक → भौमिक
* बुद्धि + इक → बौद्धिक
* योग + इक → यौगिक
लोक + इक → लौकिक

* अपवाद → परलोक + इक = परलौकिक

(2) (य) प्रत्यय
नियम → इक प्रत्यय के सभी नियम काम करते हैं तथा अन्तिम वर्ण आधा हो जाता है। फिर (य) प्रत्यय जोड़ते हैं।

जैसे → ~~सा~~ साहित + य = साहित्य
मन + य → मान्य
समान + य → सामान्य
वत्सल + य → वात्सल्य
दीन + य → दैन्य
धीर + य → धैर्य
दिती + य → दैत्य
अदिति + य → आदित्य
उचित + य → औचित्य
उदार + य → औदार्य
एक + य → ऐक्य
ईश्वर + य → ऐश्वर्य
सुन्दर + य → सौन्दर्य
शुर + य → शौर्य
शिथिल + य → शैथिल्य
कवि + य → काव्य
* स्वस्थ + य → स्वास्थ्य
* स्वतंत्र + य → स्वातंत्र्य
महात्मा + य → माहात्म्य
चेतना + य → चैतन्य

श्री

19/03/25

अधिपति + य → आधिपत्य (स्वामित्व)
चतुर + य → चातुर्य
धान + य → धान्य
दम्पती + य → दांपत्य
पंडित + य → पांडित्य
विराग + य → वैराग्य
* राजा + य → राज्य
संख्या + य → सांख्य
सुजन + य → सौजन्य
* मित्र + य → मैत्र्य
विधवा + य → वैधव्य
कुटिल + य → कौटिल्य
विधि + य → वैध्य (कानून)
वेद + य → वैद्य (वैद्य) (औषधि)

③ [एय] प्रत्यय → इक प्रत्यय के सभी नियम काम करते हैं तथा अन्त में (एय) प्रत्यय जोड़ दिया जाता है

जैसे → अंजनि + एय → आंजनेय
कुंति + एय → कौंतेय (अर्जुन)
गंगा + एय → गांगेय (भीष्म)
राधा + एय → राधेय (कर्ण)
अत्रि + एय → आत्रेय (महर्षि)

[अ] प्रत्यय
इक प्रत्यय के सभी नियम काम करते हैं। तथा अन्तिम (उ) के स्थान पर (व) हो जाता है। फिर (अ) प्रत्यय जोड़ते हैं।

श्री

19/03/25

मनु + अ = मानव
रघु + अ → राघव
यदु + अ → यादव
पाण्डु + अ → पाण्डव
कुरु + अ → कौरव
गुरु + अ → गौरव
लघु + अ → लाघव
मधु + अ → माधव
दनु + अ → दानव

* अपवाद → कुशल + अ = कौशल
पुरुष + अ = पौरुष

* [एरा] → ककेरा (काका), चचेरा (चाचा), ममेरा (मामा), मौसेरा (मौसा), फुफेरा (फूफा)

(5) न्यूनता वाचक तद्धित प्रत्यय → संज्ञा | सर्वनाम | विशेषण के अन्त में जुड़कर स्त्री का बोध कराने वाले प्रत्यय स्त्री बोधक तद्धित प्रत्यय कहलाते हैं।

(आ) → सुता, अजा, अनुजा, छात्रा, शिष्या

[ई] देवी, बेटी, काकी, नानी

[आनी] सेठानी, नौकरानी, देवरानी, जेठानी

[आइन] चौधराइन (चौधरी), ठकुराइन (ठाकुर), पंडिताइन
मुंशियाइन (मुंशी)

[आनी] → चौधरानी (चौधरी), ठकुरानी (ठाकुर)
पंडितानी (पण्डित), नौकरानी

श्री

classmate
Date
Page

19/03/25

[ई] → चिमटी (चिमटा), घोड़ी (घोड़ा), हरिणी (हरिण)

(इका) → अध्यापिका, नायिका, लेखिका

(इन) → कुम्हारिन (कुम्हार), धोबिन (धोबी), तेलिन (तेली)
पड़ोसिन (पड़ोस), बाघिन (बाघ), मालिन (माली)
मालकिन (मालिक)

आड़ी → अगाड़ी (आगे), खिलाड़ी (खेल), पिछाड़ी (पीछे)

आस्पद → घृणास्पद (घृणा), विवादास्पद (विवाद)
संदेहास्पद (संदेह), लज्जास्पद (लज्जा), हास्यास्पद
(हास्य)

कर → दिनकर, भयंकर, हितकर, रुचिकर, प्रभाकर

कार → ~~कुम्हार~~ कुम्भकार, नाटककार, पत्रकार, साहित्यकार
मूर्तिकार, स्वर्णकार

दायी → ~~आनन्दप्यायी~~ आनन्ददायी, उत्तरदायी, कष्टदायी,
सुखदायी

धर → गंगाधर, चक्रधर, गिरिधर, भूधर, पयोधर,
विद्याधर

स्थ → अन्तःस्थ, अधीनस्थ, मध्यस्थ, गृहस्थ, तटस्थ
कंठस्थ

आना → जुर्माना, नज़राना, मर्दाना, मेहनताना, रोज़ाना,
खज़ाना

21/03/25 श्री

इंदा → जिंदा (जी), परिंदा, बाशिंदा, शर्मिंदा

खोर → आदमखोर, मुफ्तखोर, जमाखोर, चुगलखोर, हरामखोर,

दान → इत्रदान, कमलदान, कद्रदान, चायदान, पानदान पीकदान, रोशनदान

मंद → अक्लमंद, दौलतमंद, गरजमंद, सेहतमंद, शोहरतमंद।

	उदाहरण	उपसर्ग	मूलशब्द	प्रत्यय
→	उपादान	उप + आ	दान	
2.	अनाचरण	अन् + आ	चरण	
3.	तदाकार	तत् + आ	कार	
4.	प्रत्याक्रमण →	प्रति, आ,	क्रम	अन
5.	समाहरण	सम्, आ	हरण	
6.	चौधराइन →		चौधरी	आइन
* 7.	औत्सुक्य		उत्सुक	+ य
* 8.	सोदाहरण	स + उत + आ	हरण	
9.	प्रारूप	प्र + आ	रूप	
10	वैष्णव →		विष्णु	अ

श्री

21/03/25

	शब्द	उपसर्ग	मूलशब्द	प्रत्यय
11	चातुर्य		चतुर	य
12	अप्रत्यक्षता	अ, प्रति	~~प्रति~~ अक्ष/अक्षि	ता
13	निरभिमान	निर, अभि	मान	
14	दारिद्र्य		दरिद्र	य
* 15	पर्यवेक्षण	परि + अव	ईक्षण	
16	विनिर्दिष्ट	वि + निर	दिष्ट	
17	उपनिवेश	उप	निवेश	
18	व्याकरण	वि, आ	करण	
19	अप्रकाशित	अ	प्रकाश	इत
20	अव्यवस्था	अ, वि, अव	स्था	
21	अभ्युत्थान	अभि, उत	थान	
22	शैथिल्य		शिथिल	य
23	आनुवांशिकता	अनु	वंश	इक, ता
24	उपनिर्वाचन	उप, निर	वाचन	
25	पियक्कड़	पी	अ+कड़	

श्री

21/03/25

Date ______ Page ______

		उपसर्ग	मूलशब्द	प्रत्यय
26	दुर्व्यवहार →	दुर् + वि + अव	हार	
27.	सामरस्य	सम्	रस	य
28.	आध्यात्मिकता	अधि	आत्म	इक,ता
29.	सुव्यवस्थित	सु, वि, अव	स्थित (स्था + इत)	
*30	सद्व्यवहार	सत्, वि, अव	हार	
31.	आस्तिक		अस्ति	इक
*32.	पाशविक		पशु	अ, इक
33	समुज्ज्वल	सम्, उत्	ज्वल	
34.	निराकार	निर्, आ	कार	
35.	स्वास्तिक →	सु	अस्ति	इक
36.	औपन्यासिक →	उप, नि	आस	इक
37.	प्रोज्ज्वल →	प्र + उत्	ज्वल	
38.	स्वागत →	सु +	आगत (आ + गत)	
39.	पौष्टिक		पुष्ट +	इक
40	आभिजात्य	अभि	जाति	य
41.	आग्नेय		अग्नि	एय

श्री

classmate
Date
Page

21/03/25

शब्द	उपसर्ग	मूल शब्द	प्रत्यय
सुसंगठित	सम्	गठित	
समालोचना	सम्	लोचन	आ
साम्प्रदायिकता	सम्, प्र	दाय	इक, ता
अनुपस्थित	अनु, उप	स्थित	(स्था+इत)
प्रत्यागमन	प्रति +आ	गमन	
प्राधिकरण	प्र +अधि	करण	
प्रज्वलित	प्र	ज्वल	इत
प्रासंगिक	प्र	संग	इक
** अव्यवस्था	अ, वि, अव	स्था	

तद्भव - तत्सम शब्द

तत्सम	तद्भव	तत्सम	तद्भव
अंध	अंधा	कदली	केला
अन्न	अनाज	कर्तरी	कैंची
अमृत	अमीय	कोकिल	कोयल
आखेट	अहेट	कच्छप	कछुआ
अंधकार	अँधेरा	कुपुत्र	कपूत
अन्यत्र	अनत	कोटि	करोड़
अट्टालिका	अटारी	कर्षपट्टिका	कसौटी
अर्पण	अरपन	कपाट	किवाड़
अमावस्या	अमावस	कूप	कुआँ
आम्लिका	इमली	क्षीर	खीर
आदित्यवार	इतवार	क्षत्रिय	क्षत्री
एला	इलायची	गोपाल	ग्वाल
ईप्सा	इच्छा	ग्राहक	गाहक
एकत्र	इकट्ठा	गर्दभ	गधा
इक्षु	ईख (गन्ना)	गो	गाय
इष्टिका	ईंट	घृत	घी
उत्साह	उछाह		
उलूक	उल्लू	घटिका	घड़ी
उज्ज्वल	उजला	गृह	घर
उष्ट्र	ऊँट	गुहा	गुफा
उच्च	ऊँचा	चित्रक	चीता
उलूखल	ओखली	चंचु	चोंच
अवगुण	औगुण	चित्रकार	चितेरा
चूर्ण	चूरन	योगी	जोगी
क्लेश	कलेश	द्यूत	जुआ
कृषक	किसान	यव	जौ
कुक्कुट	कुत्ता	तिलक	टीका
कर्ण	कान	दंश	डंक
		ताम्र	ताँबा

01/05/25

तीक्ष्ण → तीखा	मित्र - मीत
तपस्वी → तपसी	मशक → मच्छर
तीर्थ → तीरथ	मक्षिका → मक्खी
तिथिवार → त्योहार	मर्कटी मकड़ी
दीपावली → दीवाली	रिक्त → रीता
दधि → दही	रात्रि → रात
धान्य → धान	रजनी → रैन
परीक्षा → परख	लोमश → लोमड़ी
पुष्कर → पोखर	श्राप → शाप
पाद → पैर	सप्तशती → सतसई
पर्यंक → पलंग	सपत्नी → सौत
पुस्तिका - पोथी	श्यामल → साँवला
प्रतिच्छाया → परछाईं	शुष्क → सूखा
बधिर → बहरा	स्वर्ण → सोना
मातुल → मामा	शुक → सुआ
मल → मैला	श्रावण → सावन
शृंखला	हस्तिनी → हथिनी
	होलिका → होली।

* अर्ध तत्सम → ऐसे शब्द जो मूल संस्कृत शब्दों में विकसित तो नहीं हुए परंतु उनके जो विकृत रूप हैं 'अर्धतत्सम' कहलाते हैं।

जैसे) कार्य → कारज
मर्यादा → मरजादा

→

तत्सम	अर्धतत्सम	तद्भव
वत्स	बच्छ	बच्चा
अग्नि	अगिन	आग
आज्ञा	आग्या	आन
कार्य	कारज	काज / काम
अक्षर	अच्छर	आखर / अच्छ

01|05|25

Date
Page

तत्सम व अर्ध तत्सम में अन्तर।

→ संस्कृत के वे शब्द जो बिना किसी परिवर्तन के ज्यों के त्यों प्रयुक्त होते हैं, तत्सम कहलाते हैं। अर्धतत्सम शब्द वे है जो तत्सम शब्दों से आंशिक रूप में परिवर्तित हो गए हैं। इन्हें तत्सम शब्दों में जोड़ना अत्यत सरल होता है।

जैसे

तत्सम		अर्धतत्सम
क्रिया	→	किरिया
कर्म	→	करम
अक्षर	→	अच्छर
पत्र	→	पत्तर
दरिद्र	→	दरिद्दर
कृष्ण	→	किशन
धर्म	→	धरम
दुर्दशा	→	दुरदसा

* देशज शब्द → वे शब्द जो स्थानीय बोलियों से आकर हिन्दी भाषा में मिल गए हैं, देशज शब्द कहलाते हैं।

जैसे → भोंपू, तेंदुआ, टट्टू, फटफटिया, गड़बड़, लोटा, टाँग, ठेठ, ऊधम, अंगोछा, खुरपा, घाघरा, लपलपाना, बुद्धू, परात, चुटकी, चाट, ठठेरा, खटपट, कपास, कौड़ी, केला, ताम्बूल, बाजरा, भिण्डी, काँच, कुटी, इडली, डोसा, सरसों, ताला, लूँगी, चिकना, परबल, पान, अनल आदि।

विदेशी शब्द → वे शब्द जो विदेशी बोलियों से आकर हिंदी भाषा में मिल गए हैं, विदेशी शब्द कहलाते हैं।

J.B.D.
01|05|25

Date ______
Page ______

(1) अरबी भाषा के शब्द → अखबार, अजीब, अजब, अक्ल, अमीर, आदत, आखिर, इनाम, आदमी, इशारा, कर्ज, इलाज, ईमान, उम्र, एहसान, कसूर, कमाल, कानून, किस्मत, कीमत, कुर्सी, खबर, जवाब, जहाज, तहसील, तकदीर, तबादला, दिमाग, नहर, नतीजा, दुनिया, जुलूस, मशहूर, मुहावरा, मुकदमा, मुसाफिर, हलवाई, हाजिर, हिम्मत, हुक्म, हौसला इत्यादि।

2) फ़ारसी भाषा → अदा, अगर, आवाज, आसमान, आबरू, आतिशबाज़ी, आराम, आवारा, उम्मीद, उस्ताद, किशमिश कुश्ती, खामोशी, गरम, गवाह, गिरफ्तार, जुरमाना, जोश, तबाह, तमाशा, ताजा, तेज, दफ्तर, दरबार, दवा, दंगल, दिल, दिलेर, दीवार, नापसंद, लगाम, पजामा, पाजी, पुल, पैदा, बर्फी, बारिश, बेकार, मजदूर, मकान, मोरचा, याद, यार, रंग, राज, लगाम, लेकिन, वापिस, शादी, सरकार, सौदागर

3) तुर्की शब्द → उर्दू, काबू, कुली, कुर्ता, कैंची, खंजर, खच्चर, कुर्क, कुमुक, गनीमत, चकमक, चम्मच, चिक, चेचक, तमगा, तमाशा, तोप, बहादुर, बारूद, बेगम, मुगल, सौगात, सुराग।

4) अंग्रेजी शब्द → अस्पताल, अफ़सर, अपील, ऑपरेशन कमेटी, ऑफिस, कलेक्टर, कॉलेज, कम्पाउडर, कॉलर, कार, जग, जैम, टैनस, क्लर्क, टिकट, पेपर, पेन, बूट, बुशर्ट, बूट, बैटरी, माचिस, मन मनिऑर्डर, रेल, रजिस्टर, स्कूटर, साईकिल इत्यादि।

01/05/25

Date
Page

पुर्तगाली शब्द → अन्नास, अलमारी, आलपिन, इस्पात, कमीज, कमरा, कम्बल, काज, गमला, गोभी, गोदाम, तौलिया, बाल्टी, बोतल, मिस्त्री, इत्यादि।

फ्रेंच शब्द → अंग्रेज, कारतूस, कर्फ्यू, कूपन, पिकनिक बादाम, मेयर, मीनू, लैम्प, सूप, इत्यादि।

चीनी शब्द → चाय, चीनी, चाकू, लीची इत्यादि।

जापानी भाषा के शब्द → रिक्शा, सायोनारा, झप्पान आदि

रूसी भाषा के शब्द → रूबल, जार, वोदका, सोवियत, स्फुतनिक, आदि।

डच शब्द → तुरुप (ताश में), बम (तांगा गाड़ी का)

* संकर शब्द → दो भाषाओं के शब्दों को मिलाकर बनाए गए शब्दों को 'संकर शब्द' कहते हैं।

सजाप्राप्त → सजा (फारसी) + प्राप्त (संस्कृत)
वर्षगाँठ → वर्ष (संस्कृत) + गाँठ (हिन्दी)
टिकट घर → टिकट (अंग्रेजी) + घर (देशी)
माँग पत्र → माँग (हिन्दी) + पत्र (संस्कृत)
अगनबोट → अगन (देशी) + बोट (अंग्रेजी)
रेल गाड़ी रेल (अंग्रेजी) + गाड़ी (हिन्दी)
मोटर गाड़ी मोटर (") + "
घड़ीसाज घड़ी (हिन्दी) + साज (अरबी
जाँचकर्त्ता जाँच (देशी) + कर्त्ता (संस्कृत
जेलखाना जेल (अंग्रेजी) + खाना (फारसी)
आप्रेशनकक्ष → आप्रेशन (अंग्रेजी) + कक्ष (संस्कृत)

d.8.15
25|05|01

Date
Page

→ यौगिक शब्द → विद्यालय (विद्या+आलय), पानवाला (पान+वाला), राष्ट्रपति (राष्ट्र+पति), पाठशाला (पाठ+शाला), रसोईघर (रसोई+घर), सब्जी मण्डी (सब्जी+मण्डी), बैलगाड़ी (बैल+गाड़ी) देवदूत (देव+दूत), खानघर (खान+घर) आदि।

श्री

(7)

संज्ञा

संज्ञा का अर्थ होता है नाम | सम्यक (ठीक) ज्ञान कराने वाला। किसी वस्तु, स्थान, प्राणी, भाव आदि के नाम को संज्ञा कहते हैं। जैसे → राम, मोहन, राधा, धर्मराज, अशोक नदी, पर्वत, शहर, बचपन, हरियाली आदि।

* संज्ञा के भेद

(1) व्यक्तिवाचक संज्ञा →

(2) जातिवाचक संज्ञा → द्रव्यवाचक, समूह वाचक

3 भाव वाचक संज्ञा →
- (i) मूल भाववाचक संज्ञा → सुख, दुख, प्रेम,
- (ii) यौगिक भाववाचक संज्ञा → (6)

(1) व्यक्तिवाचक संज्ञा से → राम — रामत्व, शिव — शिवत्व

(2) जातिवाचक संज्ञा से लड़का → लड़कपन, बच्चा → बचपन

(3) सर्वनाम से → अपना → अपनत्व | अपनापन
निज — निजत्व / निजता

(4) विशेषण से → सुन्दर — सुन्दरता | सौन्दर्य
अच्छा → अच्छाई

(5) क्रिया से → पढ़ना → पढ़ाई, बहना → बहाव

(6) अव्यय से → दूर — दूरी, समीप — समीपता | सामीप्य

श्री

Date ____
Page ____

26/03/25

व्यक्तिवाचक संज्ञा → वह विकारी शब्द जिससे किसी व्यक्ति विशेष, वस्तु विशेष या स्थान विशेष के नाम का बोध होता है। उसे व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते हैं। पुरुष, स्त्री, नदी, परबत, शहर, दिन, महीना, त्योहार, आदि के नाम इसके अन्तर्गत आते हैं जैसे →

1) व्यक्तियों के नाम → कालिदास, गौतम, रामांध *

2) किताबे → गीता, रामायण, महाभारत

3) देश → भारत, अमेरिका ---

4) शहर → जयपुर, दिल्ली, मुंबई, निवाई

5) नदियां → गंगा, यमुना, सरस्वती

6) त्योहार → होली, रक्षाबंधन, दशहरा, दीपावली

7) समाचार पत्र → दैनिक भास्कर, अमर उजाला, DNA

8) युद्धों के नाम → पानीपत, प्लासी, बक्सर, चौसा का युद्ध

9) भाषा → हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत

10) वार → सोमवार, मंगलवार,

11) महीने → जनवरी, फरवरी, मार्च

12) वाहन → शताब्दी, चेतक, रानीखेत

श्री

27/03/25

(13) ग्रह नक्षत्र → शनि, मंगल, आकाश गंगा

(14) धर्म → हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई

(15) ऋतु → बसंत, ग्रीष्म

(16) खेल क्रिकेट, हॉकी, शतरंज --

17) बीमारी → मलेरिया, डेंगू,

जातिवाचक संज्ञा

→ वह विकारी शब्द जिससे किसी व्यक्ति विशेष का बोध न होकर सम्पूर्ण जाति, वर्ग, समूह या समुदाय का बोध होता है। उसे जातिवाचक संज्ञा कहते हैं।

जैसे → मनुष्यों की जाति → लड़का, लड़की, स्त्री, पुरुष, आदमी, औरत, आदि।

पशु पक्षियों की जाति – गाय, बकरी, घोड़ा, तोता, मोर, [illegible] चिड़िया, आदि।

वस्तुओं की जाति – घड़ी, मेज, पंखा, साबुन, कुर्सी, किताब,

पदों या व्यवसायों के नाम – शिक्षक, वकील, बाबू, मंत्री, किसान, जुलाहा

सम्बन्ध → माता-पिता, भाई-बहन, चाचा-चाची, मामा-मामी, आदि

स्थान → नदी, तालाब, पहाड़, विद्यालय, कोठी, थाना आदि।

प्राकृतिक आपदा → ज्वालामुखी, भूकम्प, तूफान, वर्षा, बिजली आदि।

श्री

Date
Page

27/03/25

इसके दो भेद होते हैं।

(1) द्रव्यवाचक संज्ञा → इसके अन्तर्गत वे पदार्थ आते हैं जिन्हे नापा और तोला जाता है।

* धातुओं व खनिजों के नाम → लोहा, सोना, चांदी, पदार्थों के नाम → गुड़, शक्कर, गेहूँ।
द्रव पदार्थ → दूध, पानी, घी, तेल।

II समूह वाचक संज्ञा → इसके अन्तर्गत वे शब्द आते हैं जिनसे एक से अधिक होने का बोध होता है जैसे → व्यक्तियों का समूह → परिवार, संघ, कक्षा, सेना, दल।

* वस्तुओं का समूह → गुच्छा, पुंज, ढेर, शृंखला
* जानवरों का समूह → झुण्ड, टोली आदि

③ # भाव वाचक संज्ञा #

→ वह विकारी शब्द जिससे किसी व्यक्ति या समूह वस्तु के भाव, दशा, आकार, अवस्था आदि का बोध होता है। उसे भाववाचक संज्ञा कहते हैं।
जैसे → बचपन, हरियाली, सच्चाई, सुख, मिठास, दुख

* इसके दो भेद होते हैं -

① मूल भाववाचक संज्ञा → (सुख, दुख, प्रेम, घृणा, करुणा, दया....)

② यौगिक भाववाचक संज्ञा →
(1) व्यक्ति वाचक संज्ञा से → राम - रामत्व, शिव - शिवत्व

② जाति वाचक संज्ञा से → लड़का - लड़कपन, बच्चा - बचपन

त्री मैत्र। ग्नी। निज

27/03/25

मानव → मानवीय	मनुष्य → मनुष्यता
मित्र → मित्रता	गुरु → गुरुता
पशु → पशुत्व	शिशु → शिशुत्व, शिशुता
शिष्य → शिष्यत्व | शिष्यता	सज्जन → सज्जनता
सदस्य → सदस्यता	किशोर → किशोरता | कैशोर्य
कुमार → कौमार्य | कुमारता	युवक → यौवन
बालक → बालपन	पिता → पैतृक

(3) सर्वनाम से →

अपना → अपनापन | अपनत्व	निज → निजत्व | निजता
मम → ममत्व | ममता	अहं → अहंकार
सर्व → सर्वस्व	आत्म → आत्मीय | आत्मीयता
पराया → परायापन	
तेरा → तेरापन	

(4) विशेषण से →

सुन्दर → सुन्दरता | सौन्दर्य	अच्छा → अच्छाई
भला → भलाई	बुरा → बुराई
ऊँचा → ऊँचाई	चतुर → चातुर्य | चतुराई
गहरा → गहराई	मलिन → मलिनता
नकटा → नकटाई	खट्टा → खटाई
चालक → चाल | चालबाजी	काला → कालापन
चालबाज → चाल	कठोर → कठोरता | कठोरता
अरुण → अरुणता	धीर → धैर्य
उदार → उदारता | औदार्य	प्रसन्न → प्रसन्नता
आलसी → आलस्य	

(5) क्रिया से →

पढ़ना → पढ़ाई	सजाना - सजावट
बहना → बहाव	लड़ना → लड़ाई
घबराना → घबराहट	जीतना → जीत
	भूलना → भूल

श्री

27/03/25

चुनना → चुनाव	लिखना → लिखाई / लिखावट
लूटना → लूट	दौड़ना → दौड़
थकना → थकावट	हँसना → हँसी
हारना – हार	खेलना → खेल
चढ़ना → चढ़ाई	बनाना – बनावट
गुनगुनाना → गुनगुनाहट	

(6) अव्यय से → दूर → दूरी, समीप → समीपता / सामीप्य

भीतर → भीतरी	ऊपर → ऊपरी
परस्पर → परस्परता	व्यवहार → व्यावहारिक
निकट → निकटता	शीघ्र → शीघ्रता

Note (1) भाव वाचक संज्ञा का प्रयोग सदैव एक वचन में किया जाता है। यदि इसे बहुवचन बना दे तो यह जातिवाचक संज्ञा बन जाती है।

उदाहरण →

आज लोगों के दिलों दिलों में ईर्ष्याएँ बढ़ती जा रही हैं।

- वर्तमान संस्कृति में पहनावे बदल गए हैं।
- श्रेष्ठ को लिखावटों पर विशेष ध्यान देना चाहिए।
- ऊँचाइयाँ देखनी हैं तो हिमालय की देखो।
- कंस बुराइयों का भण्डार था।
- राम में अच्छाइयाँ कूट-कूट कर भरी हुई थी।

श्री

28/03/25

एकवचन भाववाचक	बहुवचन जातिवाचक
अच्छाई	अच्छाइयाँ
बुराई	बुराइयाँ
ऊँचाई	ऊँचाइयाँ
गर्मी	

Note (ii) व्यक्ति वाचक संज्ञा का जाति वाचक संज्ञा से प्रयोग जब कोई व्यक्ति विशेष सम्पूर्ण जाति का बोध कराता है तो वह जाति वाचक संज्ञा बन जाया करती है।

जैसे → आज देश में जयचंदों की कमी नहीं है – गद्दार/धोखेबाज

→ आज घर-घर में विभीषण बैठे हुए हैं – घर का भेद खोलने वाला

→ भारत तो सीता-सावित्री का देश है – पतिव्रता

→ आज देश में एकलव्य बचे ही कहा है – गुरु भक्त

→ आज हमारे देश को हरिश्चन्द्र की आवश्यकता है – सत्यवादी

→ कार्य समाप्ति के बाद सोकर कुम्भकर्ण बन गया – अधिक सोने वाला

→ आज मेरे देश को सुभाष चाहिए – देश भक्त

|| श्री ||

28/03/25

Not.(iii) जातिवाचक संज्ञा का व्यक्तिवाचक संज्ञा में प्रयोग

यदि सम्पूर्ण जाति किसी व्यक्ति विशेष का बोध कराती है तो वह व्यक्तिवाचक संज्ञा बन जाया करती है।

1) गाँधीजी हमारे राष्ट्रपिता है। → गाँधीजी (महात्मा)

2) नेहरू जी भारत के प्रथम प्रधान मंत्री थे → J.L. नेहरू

3) शास्त्री जी भारत के यशस्वी प्रधानमंत्री थे → लाल बहादुर शास्त्री

4) पटेल ने राज. का एकीकरण किया → सरदार वल्लभ भाई पटेल

5) बापू ने करो या मरो का नारा दिया - महात्मा गाँधी

6) नेताजी ने आजाद हिन्द फौज का गठन किया - सुभाषचन्द्र बोस

J.B.B

संज्ञा 7

प्र.1 चाल शब्द किस संज्ञा का उदाहरण है ? CET (2024)
→ भाववाचक संज्ञा

प्र.2 जातिवाचक संज्ञा नहीं है ?
(A) विद्वान (B) गाँव (C) सती (D) ठगी

प्र.3 भाववाचक संज्ञा का उदाहरण है
(A) मीठा (B) मित्र (C) गर्मी (D) ~~मित्र~~ मित्र

प्र.4 ~~भाववाचक~~ जाति संज्ञा का उदाहरण है -
(A) दौड़ (B) सभा (C) मित्रता (D) तूफान

प्र.5 भाववाचक संज्ञा है।
(A) अपना (B) दूरी (C) मीठा (D) बूढा

प्र.6 सभी ~~जातिवाचक~~ व्यक्ति संज्ञा है।
(A) गंगा, तालाब, नदी, समुद्र (B) बकरी, घड़ी, चश्मा, हवेली
(C) जनवरी, पृथ्वी, चाँदनी चौक प्रदीप (D) लड़ाई, ममता, साथ, रामायण

प्र.7 सभी व्यक्तिवाचक संज्ञा है ? संस्कृत II ग्रेड 2023
→ ब्राह्मण, भारतीय, श्याम (B) सुरेश, गंगा, सोमवार
(C) वाराणसी, ठग, गाय (D) हिमालय, रामचरितमानस, मित्रता

प्र.8 सभी भाववाचक संज्ञा है ?
(A) आकार, वर्तमान, समाज (B) बचपन, बुढापा, चतुराई
(C) मिठास, सत्य, पालतू (D) गहरा, उष्णता, अनुचित

(9) 'डॉ. चंदा अदम्य साहस की धनी है थी', वाक्य में प्रयुक्त 'साहस' शब्द की व्याकरणिक कोटि है ?
→ भाववाचक संज्ञा

Date 05/04/21

प्र.10 कौनसा विकल्प जातिवाचक से भाववाचक संज्ञा बना है
(A) शून्यता (B) उत्पीड़न (C) उपयोगिता (D) दासत्व

प्र.11 'बाढ़ के समान दिशाहीन' वाक्यांश में रेखांकित पद है –
(A) संज्ञा (B) सर्वनाम (C) क्रिया (D) विशेषण

प्र.12 'उन्होंने सभी लोगों में ईश्वर के दर्शन किए' में रेखांकित शब्द है –
(A) सर्वनाम (B) भाववाचक संज्ञा (C) जातिवाचक संज्ञा
(D) व्यक्तिवाचक संज्ञा

प्र.13 किस वाक्य में व्यक्तिवाचक संज्ञा, जातिवाचक संज्ञा के रूप में प्रयुक्त हुई है? PSI (2021)
(A) देश को मटवरलालों ने तरह-तरह से ठगा है।
(B) लौह पुरुष के दृढ़ संकल्प ने देश को एक सूत्र में बाँधा।
(C) भाषा की भिन्नताओं के कारण देशवासी अभिन्न हैं।
(D) हमें बुराइयों से दूर रहना चाहिए।

प्र.14 सर्वनाम से बनी भाववाचक संज्ञा है?
(A) अपनापन (B) बुढ़ापा (C) लड़कपन (D) लिखावट

प्र.15 विशेषण से बनी भाववाचक संज्ञा नहीं है?
(A) प्राथमिकता (B) सुन्दरता (C) समता (D) ममता

प्र०16 किस विकल्प में सभी सञ्ज्ञा शब्द क्रिया शब्दों से निर्मित हैं?
(A) भूल, हँसी, (B) शिक्षा, अच्छाई (C) मिठास, चुनाव
(D) पूजा, जवानी

प्र०17 क्रिया से बनी भाववाचक संज्ञा नहीं है?
(A) पढ़ाई, (B) दौड़ (C) उतराई (D) खटाई

प्र०18 सर्वनाम से निर्मित भाववाचक सञ्ज्ञा है?
(A) औचित्य (B) अहंकार (C) ईर्ष्या (D) कायरता

प्र०19 'संज्ञा पद' के पद परिचय में क्या नहीं बतलाया जाता? PTET 2020
(A) संज्ञा का प्रकार (B) लिंग (C) वचन (D) काल

प्र.20 इनमें सर्वनाम से बनी भाववाचक संज्ञा है - म. ग्रेड संस्कृत 20
(A) आर्थिकता (B) ममता (C) विषमता (D) समता

प्र.21 किस विकल्प के सभी शब्द 'भाववाचक संज्ञा' हैं?
(A) अनेकता, प्रीति, बालक (B) अपमापन, निपुण, सौन्दर्य
(C) ईर्ष्या, नैतिकता, बचपन (D) पशुता, पुस्तक, शौर्य PSO

प्र.22 किस विकल्प के सभी शब्द क्रिया से बनी भाववाचक सञ्ज्ञा है
(A) अच्छाई, दिखावट (B) पढ़ाई, लिखावट
(C) बुराई, बनावट (C) भलाई, सजावट

प्र०23 जातिवाचक से बनी भाववाचक संज्ञा

1·13·15

Date
Page

प्र०24 इनमें से किस विकल्प के सभी शब्द 'जातिवाचक' संज्ञा के उदाहरण हैं?

(A) किताब, बचपन (b) शहर, माधुर्य (c) पक्षी, रामायण (d) गाँव, गाँ

प्र०25 जातिवाचक से निर्मित भाववाचक सञ्ज्ञा है— (JLO 2019

(A) एकता (B) निकटता (c) पशुता (d) वीर

प्र०26 "हरिश्चंद्रों की सत्यता से ही भारत का सम्मान बचा हुआ है।" इस वाक्य में किस प्रकार की सञ्ज्ञा है?

(A) केवल व्यक्तिवाचक (b) व्यक्तिवाचक, जातिवाचक, भाववाचक

(c) व्यक्तिवाचक व जातिवाचक (d) " " व भाववाचक

PSI 2018

प्र०27 किसमें सभी 'विशेषण' से बनी 'भाववाचक संज्ञा' हैं?

(A) गौरव, धैर्य, पशुता (b) छुटपन, धार्मिकता, लड़कपन

(c) नैतिकता, मनुष्यत्व, स्वास्थ्य (d) प्राथमिकता, महत्व, सौन्दर्य

प्र०28 क्रिया से बनी भाववाचक सञ्ज्ञा नहीं है -

कमाई (B) पढ़ाई (c) भलाई (d) लड़ाई

प्र०29 'रोगी को बहुत घबराहट हो रही थी' रेखांकित शब्द है? RJS 2018

(A) संज्ञा (B) क्रियाविशेषण (C) क्रिया (d) अव्यय

प्र०30 निम्नलिखित शब्दों पर विचार करो (ग्रेड 2018)

(A) कल्पना (b) दर्शनीय (c) भयावट (d) सौंदर्य

उपर्युक्त में संज्ञा है → A व d

05/04/25

प्र.31 विशेषण से निर्मित 'भाववाचक संज्ञा' है -
(A) चालचलन (B) परिहास (C) बचपन (D) भव्यता

प्र. 32 दानवता (B) नवीनता (C) ममता (D) लड़कपन

प्र. 33 हिमालय से निकली गंगा का बहाव बहुत तेज है।
इस वाक्य में किस प्रकार की संज्ञा का प्रयोग हुआ है
→ व्यक्तिवाचक, भाववाचक

प्र.34 भाववाचक संज्ञा नहीं है - BSTC 2018
(A) एकता (b) बचपन (c) बनारसी (d) बैठक

प्र.35 भाववाचक संज्ञा का उदाहरण है - II ग्रेड 2018
बच्चा (B) बूढ़ा (C) यौवन (D) लड़का

प्र.36 किस विकल्प में सभी शब्द जातिवाचक संज्ञा है?
(A) गंगा, मनुष्य, हिमालय (b) जयपुर, बुढ़ापा, लड़की
(C) नदी, पहाड़, पुस्तक (d) भारत, मोहन, रामायण

प्र.37 सभी शब्द भाववाचक संज्ञा नहीं है?
(A) नम्रता, दासता, व्यावसायिक (b) दानव, ब्राह्मण, मनुष्य
(C) देवत्व, माधुर्य, राष्ट्रीयता (d) महात्म्य, मिठास, शिष्ट।

प्र.38 जातिवाचक संज्ञा है? (उपकारागार अधीक्षक 2016)
(A) गंगा (B) नदी (C) पवित्रता (d) हिमालय

प्र.39 भाववाचक संज्ञा नहीं है?
(A) घृणा (B) नित्य (C) सत्य (d) स्नेह

प्र 40 जातिवाचक से बनी भाववाचक संज्ञा है?
(A) नम्रता (B) भ्रातृत्व (C) महत्व (d) लघुता

03|04|25

(41) जातिवाचक से बनी भाववाचक संज्ञा नहीं है -
(A) खुशहाली (b) चोरी (c) दलाली (d) मजदूरी

(42) सर्वनाम से बनी भाववाचक संज्ञा है?
(A) अपनापन (B) बौतिकता (c) परायापन (d) ममता

(43) विशेषण से बनी भाववाचक संज्ञा है?
(A) छुटपन (B) बचपन (c) मातृत्व (d) शिशुता

(44) 'क्रिया' से बनी भाववाचक संज्ञा नहीं है?
(A) धुनाई (B) धुलाई, (c) पिटाई (d) सफाई

(45) 'क्रियाविशेषण' से बनी भाववाचक संज्ञा कौनसी है?
* (A) एकता (B) विविधता (c) वीरता (d) शीघ्रता

(46) भाववाचक संज्ञा से बना विशेषण नहीं है?
(A) आध्यात्मिक (b) बौतिक (c) प्राथमिक (d) व्यावहारिक

(47) 'विशेषण' से निर्मित संज्ञा है? (APO 2015)
(a) धुलाई (b) बुराई (c) लड़ाई (d) सिलाई

(48) कौनसा शब्द जातिवाचक संज्ञा से नहीं बना है?
(a) कवित्व (B) नौकरी (c) मानवता (d) स्वास्थ्य

(49) 'संज्ञा' से बना 'विशेषण' नहीं है -
(A) जोधपुरी (b) प्यारा (c) पढाकू (d) रंगीला

(50) 'जातिवाचक संज्ञा' का उदाहरण है - MVSI 2012
(A) गंगा (b) गर्मी (c) घर (d) हिमालय

51 निम्नलिखित में से किस विकल्प में सभी 'व्यक्तिवाचक संज्ञाएँ' हैं? [PSI 2011]
(A) आम, ऊँचाई, साधना (b) पन्नालाल, राधेश्याम, हिमा
(C) गाय, चालाकी, मुर्खता (d) बैल, ममता, राधेश्याम

(52) निम्नलिखित में से किस विकल्प में सभी 'भाववाचक संज्ञाएँ' हैं?
(A) अकेलापन, दृढ़ता, वृक्ष (b) खुलापन, फूहड़ता, स्वर्ग
(C) उदासी, चालाकी, शेर (d) चतुराई, धैर्य, प्रेम

(53) 'विशेषण' से भाववाचक संज्ञा' बनने वाले शब्द है-
(A) खेलता (B) दौड़ता (C) नहाता (d) शिष्टता

(54) भाववाचक से निर्मित 'विशेषण' है।
(A) ऊंचा. (B) चलता (C) प्यारा (d) रंगीन

(55) हमें गरीबों पर दया करनी चाहिए। रेखांकित शब्द है?
(A) संज्ञा (B) अवस्थासूचक विशेषण (C) विशेषण (d) क्रिया

(56) 'जटिल' विशेषण से निम्नलिखित में से उपर्युक्त संज्ञा होगी-
(A) दृष्टि (B) प्रश्न (C) समस्या (d) स्थिति

|| श्री || (8)

28|03|25

सर्वनाम

***

सर्वनाम का अर्थ होता है - सबका नाम।

- संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होने वाले शब्द सर्वनाम कहलाते हैं।

राम एक अच्छा लड़का है, (वह) ईमानदार भी है।

विशेष → ① संज्ञा के पुनरावृत्ति नामक दोष को रोकने के लिए सर्वनाम शब्दों की आवश्यकता होती है।

② सर्वनाम शब्दों का प्रयोग (11) प्रकार से किया जाता है।

③ सर्वनाम के भेद → ⑥

① पुरुष वाचक सर्वनाम
- I उत्तम पुरुष - मैं, हम, मेरा
- II मध्यम पुरुष → तुम, आप, तुम्हें
- III अन्य पुरुष → वह, वे ----

② निश्चय वाचक सर्वनाम
- निकट → यह, ये
- दूर → वह, वे

③ अनिश्चय वाचक सर्वनाम
- वस्तु → कुछ
- व्यक्ति → कोई

④ सम्बन्ध वाचक सर्वनाम
- जो....
- सो...

⑤ प्रश्न वाचक सर्वनाम → क्या, कहाँ, कौन - --

⑥ निज वाचक सर्वनाम → स्वयं, स्वतः ही, खुद, अपने आप

॥ श्री ॥

29/03/25

(1) पुरुष वाचक सर्वनाम → वह सर्वनाम शब्द जिससे कथन के कहने वाले, सुनने वाले या अन्य का बोध होता है, उसे पुरुष वाचक सर्वनाम कहते हैं।
जैसे → मैं, तुम, वह, आदि।

* इसके तीन भेद होते हैं।

(I) उत्तम पुरुष → वह सर्वनाम शब्द, जिसमें कथन के कहने वाले का बोध होता है। उत्तम पुरुष सर्वनाम कहलाता है।
→ इसे वक्ता भी कहा जाता है।
→ मैं, हम, मेरा, हमारा, हमें, आदि।
→ मैं कॉलेज जा रहा हूँ।
→ हम कल दिल्ली पहुँच जाएँगे।
→ हमें घूमने चलना चाहिए।

(II) मध्यम पुरुष → वह सर्वनाम शब्द जिससे कथन के सुनने वाले का बोध होता है, उसे मध्यम पुरुष कहते हैं।
→ इसे श्रोता भी कहा जाता है।
जैसे → तुम, आप, तुम्हें, तेरा, तुम्हारा, आपका, आदि

(III) अन्य पुरुष - वह सर्वनाम शब्द जिसमें कथन के कहने तथा सुनने वाले के अतिरिक्त किसी अन्य का बोध होता है, उसे अन्य पुरुष कहते हैं।
जैसे → वह, वे, उन्होंने, उनका, उन्हें आदि।

|| श्री ||

29|03|25

विशेष (1) जो हमारे सामने | प्रत्यक्ष में नहीं होता है, उसके लिए प्रयुक्त, 'आप' शब्द हमेशा अन्य पुरुष होता है।

जैसे → गाँधीजी हमारे राष्ट्रपिता हैं, आपका जन्म 2 अक्टूबर 1869 को हुआ।

2. पं. जवाहर लाल नेहरू ने स्वतंत्रता संग्राम में भाग लिया, आपने जेल में रहते हुए ही 'भारत की खोज' नामक पुस्तक की रचना की।

3. मोदीजी भारत के प्रधानमंत्री हैं। आप कोरोना महामारी पर मन की बात करेंगे।

(2) निश्चय वाचक सर्वनाम → वह सर्वनाम शब्द जिससे संज्ञा की निश्चितता का बोध होता है, उसे निश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं।
निकटवर्ती संज्ञा के लिए [यह, ये]
* दूरवर्ती संज्ञा के लिए - [वह, वे] शब्दों का प्रयोग किया जाता है।

→ यह कलम है।
ये मेरे कपड़े हैं।
वह पंखा है।
वे कुर्सियाँ हैं।
→ केवल वही तुम्हारी सहायता कर सकता है।

(3) अनिश्चय वाचक सर्वनाम
→ वह सर्वनाम शब्द जिससे संज्ञा की निश्चितता का बोध नहीं होता है, उसे अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं। वस्तु विशेष के लिए कुछ तथा प्राणी विशेष के लिए कोई सर्वनाम शब्दों का प्रयोग किया जाता है।

॥ श्री ॥

29/03/25

जैसे - मुझे आकाश में कुछ दिखाई दे रहा है।
→ दूध में कुछ पड़ा है।
→ दाल में कुछ काला है।
→ बाहर कोई है।
→ कमरे में कोई रो रहा है।

(4) सम्बन्ध वाचक सर्वनाम → वह सर्वनाम शब्द जिससे दो शब्दों या वाक्यों को जोड़ा जाता है, उसे सम्बंध वाचक सर्वनाम कहते हैं। इसमें → 'जो-सो' शब्दों का प्रयोग किया जाता है।

जैसे → जो सोता है, वह खोता है।
जैसी करनी, वैसी भरनी
जो आया है, वह जाएगा
जिसकी लाठी उसकी भैंस
→ जिसने तुम्हे धमकी दी है, उससे तुम्हे बचकर रहना है।
→ जैते पैर पसारिए तैते लम्बी सौर।
→ जितना गुड़ डालोगे उतना मीठा होगा

(5) प्रश्न वाचक सर्वनाम →
वह सर्वनाम शब्द जिससे वाक्य में प्रश्न का बोध होता है, उसे प्रश्न वाचक सर्वनाम कहते हैं। इसमें क्या, कहा, कौन, किससे, आदि शब्दों का प्रयोग किया जाता है।

जैसे → मोहन क्या कर रहा है ?
तुम किससे मिलने आए हो ?
बाहर कौन खड़ा है ?
यहा से पुस्तक किसने हटाई है ?
खाने में आप क्या लोगें ?
तुम्हारी मुट्ठी में क्या है ?

J.B.10

29|03|25

||श्री||

(6) निज वाचक सर्वनाम → वह सर्वनाम शब्द जो कर्त्ता के लिए प्रयुक्त होता है, उसे निजवाचक सर्वनाम कहते हैं। जिसमें स्वयं, स्वतः ही, खुद, अपने आप, आदि शब्दों का प्रयोग किया जाता है।

जैसे → हम अपना चित्र स्वयं बनाएँगे
छात्र स्वतः ही गृहकार्य करते हैं।
राधा खुद खाना पकाती है।
सीता अपने आप घर चली जाएगी।
मैं यह काम स्वतः कर लूँगा।
बच्चा अपने आप चलने लगा।

IV

Date 06/04/25

सर्वनाम

प्र.1 निम्नलिखित में अन्य पुरुषवाचक सर्वनाम है- CET 2021
(A) मैं (b) वे (c) हम (d) आप

प्र.2 निम्नलिखित में अन्यपुरुषवाचक सर्वनाम है।
(A) वे (B) मैं (C) हम (d) आप

प्र.3 'उसने कुछ नहीं खाया' इसमे 'कुछ' कौनसा सर्वनाम है?
(A) निजवाचक (b) अनिश्चयवाचक (C) प्रश्नवाचक (d) संबंधवाच

प्र.4 सर्वनाम के कितने मुख्य भेद होते है → छः

प्र.5 निम्नलिखित में निश्चयवाचक सर्वनाम का उदाहरण है?
(A) जो (b) यह (c) कौन (d) कुछ

प्र.6 यह पुस्तक मेरी है और वह तुम्हारी। वाक्य में यह और वह कौन-सी व्याकरणगत इकाइयाँ है?
(A) यह और वह दोनो ही सर्वनाम है।
(b) यह सार्वनामिक विशेषण है, और वह संकेत वाचक (निश्चयवा.) है।
(c) यह गुणवाचक विशेषण है, और वह सम्बन्ध वाचक सर्वनाम
(d) यह और वह दोनो ही विशेषण है।

प्र.7 'मैं आप चला जाऊँगा' इस वाक्य मे सर्वनाम है?
(A) प्रश्नवाचक (b) निश्चयवाचक (c) संबंध (d) निजवाचक

प्र.8 'जिसकी लाठी उसकी भैंस' रेखांकित पदों में सर्वनाम है?
(A) पुरुषवाचक (b) संबंधवाचक (c) निश्चयवाचक (d) निजवाचक

प्र.9 मध्यम पुरुष सर्वनाम का प्रयोग किस वाक्य में किया गया है?
(A) हम नहीं जाएँगे (b) आप बीमार हो गए थे।
(c) मैं अपने आप चली जाऊँगी (d) वह चली गई

Date
Page

प्र.10 किस विकल्प में 'निजवाचक' सर्वनाम का प्रयोग नहीं हुआ है?

(A) मैं आप ही चला जाऊँगा (b) श्याम अपना खाना खुद बनाता है
(C) मैं यह कार्य अपने आप कर लूँगा (d) आप कहेंगे तो ही बैठूँगा

प्र.11 पुरुषवाचक सर्वनाम के भेदों की संख्या कितनी है? III ग्रेड 2013

→ तीन ✓ [उत्तम, मध्यम, अन्य]

PSI 2021

प्र.12 किस वाक्य में 'मध्यमपुरुष' का प्रयोग नहीं हुआ है?
(A) आपको यही उचित लगता है, तो ठीक है।
(b) इस विषय में आपकी क्या राय है।
✓(C) हम अपने आप को भूल गए
(d) यह बात आप ही कह दीजिए।

प्र.13 किस वाक्य में पुरुषवाचक सर्वनाम नहीं है?
(A) हम स्कूल जा रहे हैं। (b) उसमें कोई नहीं है।
(C) आप यहाँ बैठिए (d) सामान कौन लाएगा

प्र.14 'निजवाचक' सर्वनाम का प्रयोग नहीं हुआ है?
(A) वे अपने आप चले गए
(b) वह अपने आप को बहुत होशियार समझता है।
✓(C) मैं आप लोगों का बहुत आभारी हूँ।
(d) किसान अपने आप में मस्त रहता है।

प्र.15 किस वाक्य में मध्यम पुरुष का प्रयोग हुआ है?
(A) आप भला तो जग भला
(b) यह कार्य मैं आप ही कर लूँगा
✓(C) ऐसे समय में आप साथ न दोगे तो और कौन देगा?
(d) अपने से बड़ों का आदर करना चाहिए।

प्र.16 किस वाक्य में निजवाचक सर्वनाम नहीं है? (JLO 2019)
(A) अपना-अपना कार्य करके ही घर जाना
(b) आप आगे आ जाएँ
(C) यह काम तुम स्वयं करलो।
(d) वह अपने आप चला गया।

प्र.17 'तुम जिसे चाहो, उसे बुला सकते हो' इस वाक्य में इनमें से कौन-कौन से सर्वनाम प्रयुक्त हुए हैं? II ग्रेड 2019
(A) अनिश्चयवाची, अन्य पुरुष (B) मध्यम पुरुष, निश्चयवाची
(C) निजवाचक, मध्यम पुरुष (d) सम्बन्धवाची, मध्यम पुरुष

प्र.18 'आप नहीं जानते, सत्येन्द्र अपने-आप सारे काम कर लेता है'। इस वाक्य में कौनसे सर्वनाम प्रयुक्त हुए हैं?
(A) उत्तम पुरुष, अनिश्चयवाची, (B) निजवाचक, मध्यम पुरुष
(C) अन्य पुरुष, निश्चयवाची (d) संबंधवाची, अन्य पुरुष

(19) 'आपके बारे में कल कोई कुछ कह रहा था'। II ग्रेड 2010
A अन्य पुरुष, अनिश्चयवाची (b) अनिश्चयवाची, मध्यम पुरुष
C निश्चयवाची, मध्यम पुरुष (d) निजवाचक, संबंधवाचक

(20) किस वाक्य में 'मध्यम पुरुष' का प्रयोग नहीं है? II ग्रेड 20
(A) आपने तो कमाल कर दिया
(b) आप बहुत अच्छा गाती हैं।
(C) तुम दिल्ली से कब आए
(d) सुभाषचन्द्र बोस महान देशभक्त थे। आपने देशसेवा के उच्च पद का भी त्याग कर दिया था।

06/04/25

II ग्रेड 2018

प्र.21 किस वाक्य में 'मध्यम पुरुष सर्वनाम' है ?
(A) आप गाँव से कब आए (b) मैंने अपना काम कर लिया
(c) आप काज महा काज (d) वह अपने चला जाएगा।

प्र.22 निम्नलिखित में से किस वाक्य में 'संबंधवाचक सर्वनाम' का प्रयोग नहीं हुआ है ? II ग्रेड 2017
(A) जैसी करनी, वैसी भरनी (b) जितना गुड़ डालोगे, उतना मीठा
(c) तुम अपनी पुस्तक पढ़ो (d) आप जो न करो, सो थोड़ा है।

प्र.23 जिस सर्वनाम से वक्ता के पास अथवा दूर की किसी वस्तु का बोध होता हो, को कहते हैं - (RJS 2015)
(A) अनिश्चयवाचक सर्वनाम (b) निश्चयवाचक सर्वनाम
(C) निजवाचक सर्वनाम (d) सम्बन्धवाचक सर्वनाम

प्र.24 'महीप स्वावलंबी छात्र है, उसे जितना काम करना होता है उतना वह स्वयं कर लेता है।' वाक्य में सर्वनाम है। APO 2015
(A) निश्चय अन्यपुरुषवाचक, संबंधवाचक, निजवाचक है।

प्र.25 इनमें से किस वाक्य में 'मध्यम पुरुष' का प्रयोग हुआ है ?
(A) आप भला तो जग भला।
(b) क्या वह अपने आप झुका है ?
(c) कलाम साहब जाने माने वैज्ञानिक थे, पिछले दिनों आपका निधन हो गया।
(d) आपने इसकी शांति का भी कुछ उपाय किया है ?

(26) यह, वह, तुम, आप (RJS 2015)
→ सर्वनाम

CLASSMATE
Date
Page

06/03/25

(27) किसी निश्चित व्यक्ति, वस्तु, घटना, या कर्म के लिए प्रयुक्त होने वाले शब्द क्या कहलाते हैं? (ग्रेड 2014)

(A) अनिश्चय वाचक सर्वनाम (b) निश्चयवाचक सर्वनाम
(C) पुरूषवाचक सर्वनाम (d) निजवाचक सर्वनाम

प्र.28 'निजवाचक सर्वनाम' का उदाहरण है –
(A) हमें अपना काम स्वयं करना चाहिए।
(b) जैसा करोगे, वैसा भरोगे।
(C) हम किसी का कुछ नहीं बिगाड़ सकते।
(d) तुम्हारा घर यह नहीं है।

प्र.29 किस क्रम में 'प्रश्नवाचक सर्वनाम' नहीं है?
(A) कौन (B) क्या (C) कैसे (d) तुम

प्र.30 यह किस सर्वनाम का उदाहरण है? (MVSI 2012)
(A) निश्चय वाचक

प्र.31 किस समूह में सभी प्रश्नवाचक सर्वनाम हैं?
(A) कौन, क्या, किसने (b) जो, कोई, वह
(C) किनका, जिनका, जो (d) जिन्होंने, उन पर, उसको

प्र.32 इनमें से किस वाक्य में सम्बंध वाचक सर्वनाम है?
(A) मैं अपना काम स्वयं करता हूँ।
(B) कोई कुछ भी कहे हमें क्या।
(C) जिसे भी देखता हूँ, वही व्यस्त है।
(d) वह स्वतः संभल गया

प्र.33 सामने जो बड़ा महल दिखाई दे रहा है, वह मेरा है। रेखांकित पद में सर्वनाम है।
(A) पुरूषवाचक (B) निश्चयवाचक (C) अनिश्चयवाचक (d) निज

Date ______
Page ______

06|08|25

(34) किस क्रम में निजवाचक सर्वनाम नहीं है ?
(A) मैं अपना काम स्वयं करता हूँ।
b) वह स्वतः समझ जाएगा।
c) किस-किस का नाम सूची मे नहीं आया।
d) वह अपने आप ही विद्यालय गया।

(35) इनमें से किस वाक्य मे सम्बंध वाचक सर्वनाम है ?
(A) इस गाड़ी को देखो, यह कितनी उपयोगी है।
(b) अयोध्या जाने के लिए किससे कहूँ ?
(c) तेते पाँव पसारिए, जेती लाम्बी सौर
(d) शर्माजी का घर यह नहीं, वह है।

(36) किस क्रम में 'निश्चयवाचक सर्वनाम' का उदाहरण है ?
(A) इस पुस्तक को देखो, यह कितनी उपयोगी है ?
(b) अरे नालायक! तू इधर क्या कर रहा है ?
(c) कोई कुछ भी कहे, हमें क्या।
(d) आपका शुभ नाम क्या है ?

(37) नेहरूजी ने भारत के स्वतंत्रता संग्राम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। आपने जेल में 'भारत की खोज' नाम पुस्तक लिखी। वाक्य में रेखांकित पद है।
(A) अन्यपुरुष सर्वनाम (b) मध्यम पुरुष सर्वनाम
(c) निजवाचक सर्वनाम (d) संबंध वाचक सर्वनाम

(38) 'मोहन प्रकाश जी.... हिन्दी पढ़ाते हैं' इस वाक्य में रिक्त स्थान की पूर्ति 'अन्य पुरुषवाचक' सर्वनाम से करो -
(A) मुझे (b) तुम्हें (c) उन्हें (d) हमें

Date 08/04/25

(39) निम्नलिखित में से किस विकल्प में सभी 'पुरुषवाचक सर्वनाम हैं ?
(A) हम, तुम, ये, वे, मैं (b) आप, कुछ, जो, यह
(c) जो, कोई, वह, स्वयं (d) मैं, तुम, आप, किसी

प्र.40 शायद कमरे में कोई छिपा हुआ है। वाक्य में रेखांकित पद है।
(A) अनिश्चयवाचक सर्वनाम ✓

(41) निम्नलिखित में से 'उत्तमपुरुष बहुवचन संबंध कारक है—
(A) उसका (b) तुम्हारा (c) मेरा (d) हमारा

(42) ये आम 'उसके लिए हैं' इस वाक्य में रेखांकित अंश है
(A) अन्य पुरुष एकवचन संप्रदान (B) मध्यम पुरुष एकवचन संप्रदान
(C) उत्तम पुरुष एकवचन अपादान (d) मध्यम पुरुष बहुवचन "

विशेषण (9)

—*—

01/04/25

* संज्ञा और सर्वनाम की विशेषता प्रदर्शित करने वाले शब्द विशेषण कहलाते हैं।

जैसे → सुन्दर, मूर्ख, दयालु, काला, लम्बा, आदि।

विशेष्य → जिसकी विशेषता प्रदर्शित की जाती है उसे विशेष्य कहते हैं। जैसे → चन्द्रमुख

प्रविशेषण → विशेषण की विशेषता बताने वाले शब्दों को प्रविशेषण कहलाते हैं।
जैसे → भीम बहुत अधिक खाना खाता था
(बहुत → प्रविशेषण, अधिक → विशेषण)

विशेषण के भेद (4)

(1) गुण वाचक विशेषण → मूलावस्था (I), उत्तरावस्था (II), उत्तमावस्था (III)
श्रेष्ठ, श्रेष्ठतर, श्रेष्ठतम

(2) संख्या वाचक विशेषण → (I) निश्चित संख्या वाचक विशेषण
(II) अनिश्चित संख्या वाचक वि०

(1) गणना वाचक → एक, दो, तीन ....
(2) क्रम वाचक वि० → पहला, दूसरा, ...
(3) आवृति वाचक → दुगुना, चौगुना ....
(4) समुदाय वाचक → दोनों, चारों ....

(3) परिमाण वाचक विशेषण → निश्चित परिणाम वाचक
2 → अनिश्चित परिणाम वाचक

→ भीम बहुत अधिक खाना खाता है।
(बहुत → प्र० वि०, अधिक → वि०)

01/04/25

④ सङ्केत वाचक विशेषण
(सार्वनामिक विशेषण)

* विशेष्य → धर्मराज ने सफेद कमीज पहन रखी है।
शुद्ध पानी पीना चाहिए
मैं गाय का शुद्ध दूध पीता हूँ।
यह कमीज काली है।
ये फल मीठे हैं।

Note → विशेष्य से पहले प्रयुक्त होने वाले विशेषण उद्देश्य विशेषण तथा बाद में प्रयुक्त होने वाले विधेय विशेषण कहलाते हैं।

गुणवाचक विशेषण → वे शब्द जिनसे संज्ञा या सर्वनाम के गुण, दोष, रंग, आकार, अवस्था आदि का बोध कराने वाले होता है।

~~विशेषगुण~~ → अच्छा, सुन्दर, सीधा, सरल, परिश्रमी, ईमानदार, सच्चा, दयालु आदि।

दोष → बुरा, असभ्य, उद्दण्ड, झूठा, आलसी, कृपण,

आकार → लम्बा, चौड़ा, छोटा, बड़ा, ऊँचा, तिकोना, चौकोर पतला, मोटा आदि।

रंग → काला, पीला, नीला, लाल, हरा।

अवस्था ~~स्वाद~~ → बूढ़ा, युवा, अधेड़, तरुण, प्रौढ़, आदि।

03/04/15

स्वाद → मीठा, खट्टा, कड़वा, नमकीन, तीखा, कसैला, आदि

गंध → खुशबूदार, बदबूदार, सुगंधित, आदि।

जैसे → बूढ़ा व्यक्ति चल नहीं सकता।

वह कठोर भूमि पर बैठा है।

दयालु राजा प्रजा को सुखी रखा करते थे।

लाल रंग क्रांति का सूचक है।

इसकी तीन अवस्थाएँ होती हैं-

(I) मूलावस्था → जब केवल एक ही व्यक्ति या वस्तु की विशेषताएं प्रदर्शित की जाती हैं, उसे मूलावस्था कहते हैं।
जैसे → कलम सुन्दर है।

(II) उत्तरावस्था → जब दो का तुलनात्मक अध्ययन करके किसी एक को श्रेष्ठ बताया जाता है, उसे उत्तरावस्था / मध्यावस्था कहते हैं।
जैसे → सीता गीता से चतुर है।

(III) उत्तमावस्था → जब बहुत का एक साथ अध्ययन कर करके किसी एक को सर्वश्रेष्ठ बताया जाता है, उसे उत्तमावस्था कहते हैं।
जैसे → धर्मराज कक्षा में सबसे होशियार है।

03/04/25

मूलावस्था	उत्तरावस्था	उत्तमावस्था
श्रेष्ठ	श्रेष्ठतर	श्रेष्ठतम
महान	महानतर	महानतम
चतुर	चतुरतर	चतुरतम
मधुर	मधुरतर	मधुरतम
उच्च	उच्चतर	उच्चतम
निम्न	निम्नतर	निम्नतम
अधिक	अधिकतर	अधिकतम
लघु	लघुतर	लघुतम
गुरु	गुरुतर	गुरुतम
दृढ़	दृढ़तर	दृढ़तम
दीर्घ	दीर्घतर	दीर्घतम
निकट	निकटतर	निकटतम
प्रिय	प्रियतर	प्रियतम
पवित्र	पवित्रतर	पवित्रतम
पावन	पावनतर	पावनतम
मृदु	मृदुतर	मृदुतम
समीप	समीपतर	समीपतम
तीव्र	तीव्रतर	तीव्रतम
शीघ्र	शीघ्रतर	शीघ्रतम
कोमल	कोमलतर	कोमलतम

J.B.H.O

Date 03/04/25

Page

② संख्यावाचक विशेषण →

संख्या के आधार पर संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता प्रदर्शित करने वाले शब्द संख्यावाचक विशेषण कहलाते हैं।

* इसके दो भेद हैं।

(1) निश्चित संख्या वाचक विशेषण → इसमें निश्चित संख्या का बोध होता है, इसके ④ भेद हैं।

जैसे → आज पाँच छात्र अनुपस्थित हैं। → गणना वाचक

गली का पहला मकान मेरा है → क्रम वाचक

मेरा वेतन दो गुना बढ़ चुका है → आवृत्ति वाचक

चारों छात्र खड़े हो जाओ → समुदाय वाचक

② अनिश्चित संख्या वाचक विशेषण → इससे निश्चित सं. का बोध नहीं होता है।

जैसे → आज कई छात्र अनुपस्थित हैं।

कुछ लोग सभा में उपस्थित थे।

मुझे थोड़े से रुपये चाहिए।

Note → यदि निश्चित संख्या में "ओं" प्रत्यय जोड़ दिया जाए तो वह सं. अधिकांशतः अनिश्चित हो जाया करती है।

जैसे → सैकड़ों मजदूर काम पर लौट आये।

केदारनाथ में हजारों लोग मारे गये।

बाबा रामदेव के मेले में लाखों श्रद्धालु पहुँचे।

③ ~~परि~~ परिमाण वाचक विशेषण :

→ नाप-तोल के आधार पर संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता प्रदर्शित करने वाले शब्द, परिमाण वाचक विशेषण कहलाते हैं।

इसके दो भेद होते हैं।

Date ______
Page ______

① निश्चित परिमाण वाचक विशेषण –
नाप तोल के आधार पर संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता प्रदर्शित करने वाले शब्द, परिमाण वाचक वि० — —

(I) → इसमें निश्चित परिमाण का बोध होता है।
जैसे → आज पाँच लीटर दूध चाहिए।
* राशन की दुकान से दो किलो चीनी लाओ।
* पिताजी मण्डी से चार किलो आलू, दो किलो प्याज तथा एक किलो टमाटर खरीदकर लाये।

(II) अनिश्चित परिमाण वाचक विशेषण →
इसमें निश्चित परिमाण का बोध नहीं होता है।

जैसे → भीम बहुत अधिक खाना खाता था।

* अभी कुछ काम बाकी है।

* खराब नल से हजारों लीटर पानी बह गया।

* मनो केले सड़ गए।

* जरा-सा अचार लाना

* थोड़ी सी चटनी देना

J.B.13.

संज्ञा से विशेषण शब्दों की रचना।

संज्ञा → विशेषण

- जोश → जोशीला
- दुख → दुखी
- पत्थर → पथरीला
- अनुभव → अनुभवी
- ईर्ष्या → ईर्ष्यालु
- निंदा → निंदक | निंदित
- मिठाई → मीठा
- रस → रसीला
- लालच → लालची
- सुर → सुरीला
- आदर → ~~ओजस्वी~~ आदरणीय
- ईमानदारी → ईमानदार
- ओज → ओजस्वी
- कुल → कुलीन
- गाँव → गँवार
- मानव → मानवीय
- अपमान → अपमानित
- उदासी → उदास
- कृपा → कृपालु
- विश्वास → विश्वासी | विश्वसनीय
- * शक्ति → शक्तिमान
- शर्म → शर्मीला
- सौंदर्य → सुन्दर

- खटास → खट्टा
- चतुरता → चतुर
- ~~झड़~~ झगड़ा → झगड़ालु
- प्यास → प्यासा
- बुद्धि → बुद्धिमान
- चमक → चमकीला
- ज्ञान → ज्ञानी
- पाप → पापी
- दान → दानी
- नगर → नागरिक
- बल → बली | बलवान
- साहस → साहसी
- सुख → सुखी
- कलंक → कलंकित
- * चाल → चालाक
- जहर → जहरीला
- नमक → नमकीन
- पूजा → पूजनीय

④ संकेत वाचक विशेषण :-

वह सर्वनाम शब्द जो संज्ञा से पहले आकर विशेषण का काम करता है, उसे संकेत वाचक | सार्वनामिक विशेषण कहते हैं।

→ वह लड़का पढ़ाई में होशियार है।

मेरा घर सड़क के उस पार है।

यह पुस्तक किसकी है?

वह महिला बहुत बुद्धिमती है।

उस देवी को मैं आज भी याद करता हूँ।

9 II

Date 06/04/25

विशेषण

प्र01 "खीर तैयार करने में आधा किलोग्राम दूध लग गया। वाक्य में किस विशेषण का प्रयोग हुआ है? CET 2024

→ परिमाणवाचक विशेषण

प्र.2 इनमें से कौन गुणवाचक विशेषण नहीं है?

(A) ऊपरी (b) सरल (c) प्रत्येक (d) भला

प्र03 जिससे संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताई जाए, वह कहलाता है -

Ans विशेषण

प्र04 संज्ञा शब्दों से बने विशेषण है? LDC 2024

(1) कितना (2) अंकित (3) आर्थिक (4) काली (5) लड़ाकू

प्र05 संज्ञा-विशेषण शब्द का असंगत रूप है:

(A) पत्थर-पथरा (b) मास-मासिक (c) लोक-लौकिक (d) नगर-नागरिक

प्र06 संज्ञा शब्द से विशेषण का संगत युग्म है:

(A) बिकना-बिकाऊ (b) गाना-गवैया (c) तैरना-तैराक (d) पशु-पाशविक

प्र07 'क्षणिक क्रोध जीवन नष्ट कर देता है' वाक्य में कौन-सा विशेषण है -

(A) संख्यावाचक (b) गुणवाचक (c) संकेतवाचक (d) परिमाणवाचक

प्र08 'उपनिवेश' शब्द से बना हुआ समुचित विशेषण शब्द होगा -

→ औपनिवेशिक

प्र09 संज्ञा से निर्मित विशेषण नहीं है। CET 2023

(A) निंदित (b) दानवीय (c) चिंतन (d) मानवीय

प्र.10 किस समूह में सभी शब्द गुणवाचक विशेषण नहीं है?
(A) नया, पुराना, ताजा (b) लम्बा, चौड़ा, गहरा
(C) आधा, बहुत, अल्प (d) भला, बुरा, उचित

प्र.11 जिस विकारी शब्द से संज्ञा की व्याप्ति मर्यादित होती है'' उसे कहते हैं?
(A) विशेषण (B) क्रिया (C) अव्यय (d) संज्ञा

प्र.12 किस विकल्प में गुणवाचक विशेषण नहीं है? II ग्रेड 2023
(A) पिछला, वर्तमान, नया (b) उचित, शांत, सीधा
(C) सब, यथेष्ट, समूचा (d) काला, बुरा, दुष्ट

प्र.13 गुणवाचक विशेषण से सम्बंधित वाक्य कौनसा है? PSI 2021
(A) बालक पहली कक्षा में पढ़ता है।
(b) यह पुस्तक मेरी है।
(C) हमें कपटी व्यक्ति से दूर रहना चाहिए।
(d) समारोह में अनेक लोग उपस्थित थे।

प्र.14 किस विकल्प में सभी विशेषण शब्द संज्ञा शब्दों में रचित है?
(A) शिक्षित, कमाऊ (b) भीतरी, आपसी
(C) पीड़ित, दयनीय (d) वार्षिक, पिछला

(15) 'विशेषण' शब्द से रहित वाक्य कौनसा है?
(A) मैं पिछले वर्ष गाँव गया था
(b) सभा में कम लोग आए थे।
(C) दुकान से कुछ फल खरीद लाओ।
(d) मोटा खाओ, खूब कमाओ

(16) संज्ञा से निर्मित विशेषण है -
(A) दैनिक (b) आपसी (c) टिकाऊ (d) अगला

(17) विशेषण की उत्तमावस्था का प्रयोग किस वाक्य में किया गया है?
(A) मोहन की अपेक्षा सोहन होशियार है।
(b) उसे सर्वाधिक अंक प्राप्त हुए।
(c) मेरा घर उसके घर से छोटा है।
(d) यह बहुत सुन्दर चित्र है।

(18) किस वाक्य में सार्वनामिक विशेषण प्रयुक्त हुए हैं?
(A) वह पुस्तक पढ़ रहा है।
(b) कोई आदमी आया था।
(c) आप तो महान हैं।
(d) वे कल जा रहे हैं।

(19) संदीप बहुत अच्छा गाता है। वाक्य में बहुत शब्द क्या है
→ प्रविशेषण

2021
(20) सार्वनामिक विशेषण युक्त वाक्य है? [कॉलेज प्राध्यापक]
(A) इतने गुणज्ञ और रसिक लोग एकत्र हैं।
(b) दोनों के दोनों लड़के मूर्ख निकले
(c) राम का सिर कुछ भारी सा हो गया
(d) उसे दवा दो-दो घंटे के बाद दी जाए।

प्र.21 'डॉ. चंद्रा अदम्य साहस की धनी थी' वाक्य में रेखांकित शब्द में विशेषण है - REET 2021
Ans गुणवाचक

(22) किस विकल्प में सभी विशेषण संज्ञा से बने हैं? PO
(A) खानदानी, सफेद (b) कड़वा, जहरीला
(c) पुराना, भगोड़ा (d) श्रद्धालु, रंगीला

Date
Page

(23) कौनसा शब्द विशेषण नहीं है? [JLO-2019]
(A) इकहरा (b) प्रार्थी (c) साप्ताहिक (d) सुवासित

(24) किस वाक्य में 'सार्वनामिक विशेषण' प्रयुक्त हुआ है
(A) उसे खाना खिला दो (b) यह मेरी प्रिय पुस्तक है।
(c) वह बस जयपुर जाएगी (d) बेचार दिन बाद लौटेंगे

(25) "आज चुनाव का तीसरा दिन है और मतदान-कर्मी थोड़ी-सी शांति के साथ आराम कर रहे हैं।"
इस वाक्य में कौन-कौनसे विशेषण हैं? (II ग्रेड 2019)
(a) व्यक्तिवाचक, गुणवाचक
(b) गुणवाचक, अनिश्चित संख्यावाचक (81)
(c) निश्चित परिमाणवाचक, संकेतवाचक
(d) अनिश्चित परिमाणवाचक, निश्चित संख्यावाचक

प्र०26 यहाँ से दो किलोमीटर बाद तुम्हें एक हरा-भरा बगीचा दिखाई देगा' इस वाक्य में इनमें से कौन-कौनसे (a) विशेषण प्रयुक्त हुए हैं?
(A) अनिश्चित परिमाणवाची, निश्चित संख्यावाची
(B) गुणवाचक, निश्चित संख्यावाची
(C) अनिश्चित संख्यावाची, गुणवाचक
(d) संकेत वाची, अनिश्चित परिणामवाची

प्र०27 कौनसा शब्द विशेषण नहीं है? II grade 2019
(A) बेचारा (b) बेसहारा (c) भाईचारा (d) थकाहरा

प्र०28 संज्ञा से बना विशेषण नहीं है?
(A) आर्थिक (b) प्राथमिक (c) वैज्ञानिक (d) सामाजिक

(29) कौन-सा विशेषण संज्ञा से नहीं बना?
(A) अधिकाधिक (b) ग्रामीण (c) वार्षिक (d) मानवीय

Date 6|4|28
Page

प्र० 30 'संज्ञा से बना हुआ विशेषण है? L.D.C. 2018
(A) कटु (B) प्रसन्न (C) सुन्दर (D) सुखी

(31) संज्ञा शब्द से बना 'विशेषण' है?
(A) भुलक्कड़ (B) बिकाऊ (C) दुखी (D) हमारा

(32) किस विकल्प में सभी शब्द संज्ञा से बने विशेषण है?
(A) आलसी, पैतृक, लिखित (B) पढाकू, भीतरी, वैवाहिक
(C) पौराणिक, मानवीय, लखपती (D) बनावटी, विदेशी, श्रमिक

(33) इनमें 'शक्ति' से बना विशेषण है- LDC 2019
(A) शक्तिम (B) शक्तिशाली (C) सशक्त (D) साक्त

(34) संज्ञा शब्द से निर्मित विशेषण है।
(A) कायिक (B) भला (C) वैसा (D) स्वकीय

(35) संज्ञा से बना विशेषण नहीं है?
(A) चालबाज (B) नमकीन (C) मार्मिक (D) शारीरिक

(36) संज्ञा शब्द 'नमक' से बना विशेषण है? LDC 2018
(A) नमकिय (B) नमकीन (C) नामक (D) नामिक

(37) 'संज्ञा' शब्द से बना 'विशेषण' है। LDC 2018
(A) चालू (B) भुलक्कड़ (C) लखपती (D) हंसोड़

(38) संज्ञा से बना विशेषण है?
(A) ऊपरी (B) कमाऊ (C) सुअक्कड़ (D) सुगंधित

(39) संज्ञा से बना विशेषण नहीं है-
(A) कंटीला (B) जहरीला (C) नीलापन (D) रोबीला

06|05|2025

(46) मूल संज्ञा शब्दों 'इतिहास' 'उपेक्षा' के सही विशेषण विकल्प है।

Ans → ऐतिहासिक उपेक्षित

(41) कौनसा शब्द विशेषण नहीं है? PSI 2018
(a) गुरुतर (b) भीतर (c) विगत (d) विश्वस्त

(42) कौनसा शब्द विशेषण नहीं है? (प्र.ग्रे.3 2017)
(A) अच्छा (b) अनेक (c) धोखा (d) प्रथम

(43) 'सार्वभौमिक विशेषण' का उपयुक्त उदा. है (LDC 2017)
(A) वह आ रहा है। (b) काला कुत्ता भौंक रहा है।
(c) वह आदमी हँसता है। (d) सीता अच्छी लड़की है।

(44) किस वर्ग में सभी विशेषण संज्ञा शब्दों से बने हैं?
(A) आलसी, दर्शनीय, भारतीय (b) कमाऊ, पैतृक, रक्षक
(c) कैसा, शीतल, सुन्दर (d) वैसा, सुरीला, स्वर्गीय (28)

(45) विशेषण से बनी संज्ञा है [उपकारागार अधीक्षक 2016]
(A) बालपन (b) ममता (c) लड़कपन (d) सुंदरता

(46) भाववाचक संज्ञा से बना विशेषण नहीं है -
(A) आध्यात्मिक (b) नैतिक (c) प्राथमिक (d) व्यावहारिक

(47) कौनसा विशेषण शब्द नहीं है?
(A) पकाहरा (b) बेचारा (c) बेसहारा (d) मजदूरी

(48) संज्ञा शब्दों में किसके मेल से विशेषण शब्दों का मेल होता है। [नगर निगम 2016]
(A) उपसर्ग (B) कारक (c) प्रत्यय (d) विशेषण

Date 06/04/

(49) संज्ञा में 'आ' प्रत्यय लगने पर बना विशेषण है
(A) अच्छा (b) भूखा (c) प्यासा (d) सच्चा

(50) 'समझ' शब्द में कौनसा प्रत्यय लगने से वि. शब्द बनेगा → दार → [समझदार]

(51) 'राष्ट्र' शब्द से निर्मित विशेषण है –
→ राष्ट्रीय ✓

(52) 'रक्त' शब्द से निर्मित विशेषण
(A) रक्तिक (b) रक्तिम (c) रक्तिय (d) रक्तिमा

(53) संज्ञा से निर्मित विशेषण है –
(A) कवित्व (b) पांडित्य (c) मातृत्व (d) स्वर्गीय

(54) कौनसा शब्द संज्ञा से निर्मित विशेषण है?
(A) कुलीन (b) डकैती (c) नारीत्व (d) पशुता

(55) संज्ञा से निर्मित विशेषण है?
(A) आदमी (b) भारतीय (c) भुलक्कड़ (d) भीतरी

(56) कौनसा विकल्प संज्ञा और उससे निर्मित विशेषण है
(A) आलस-आलसी (b) खामोश-खामोशी
(c) छोड़ना - छूट (d) बूढ़ा - बुढ़ापा

(57) (A) कल्पना - काल्पित (b) कवि-कवित्व
(c) स्व → स्वत्व (d) मम → ममत्व

(58) संज्ञा और उससे निर्मित विशेषण है?
(A) आयु-आयुष्मान् (b) पूजा- पूजना
(c) सफल - सफलता (d) लूटना - लूट

Date
Page

06/04/25

(59) इनमें से कौनसा शब्द संज्ञा से बना विशेषण नहीं है
~~(A)~~ ईमानदारी (b) दयालु (c) ईर्ष्यालु (d) सुखी

(60) 'कुलीन' विशेषण किस संज्ञा से बना है?
(a) ईन ~~(b)~~ कुल (c) कुली (d) लीन

(61) संज्ञा से निर्मित विशेषण नहीं है? LDC 2016
(A) इमारती (B) धनी (C) बुद्धिमानी ~~(D)~~ हँसोड़

(62) 'अभिनन्दन' से निर्मित विशेषण नहीं है?
(A) अभिनन्द्य ~~(b)~~ अभिवादित (c) अभिनन्दनीय (d) अभिनंदित

(63) 'रमेश चतुराई से काम करता है' वाक्य में विशेषण से बनी संज्ञा है?
Ans चतुराई।

(64) संज्ञा से बने विशेषण है? (LDC, RPSC 2016)
~~(A)~~ सुखी (b) ऊपरी ~~(c)~~ ज्ञानी (d) भगोड़ा

(65) सभी संज्ञा से बने हुए विशेषण है?
(A) अगला, दयनीय (b) अड़ियल, दैनिक
(c) बाहरी, माननीय ~~(d)~~ कथ्य, दैहिक

(66) संज्ञा से बना विशेषण है?।
(A) अड़ियल (b) वीरता (c) निचला ~~(d)~~ सुगंधित

(67) संज्ञा से बना विशेषण नहीं है?
(A) चचेरा (b) धार्मिक ~~(c)~~ बाहरी (d) लालची

(68) ग्रामीण (b) दैनिक ~~(c)~~ बाहरी (d) भारतीय

Date 06|04|15

69) तुलना की दृष्टि से विशेषण की अवस्थाएँ हैं – [F. प्रवेशक 2015]
A) तीन [उत्तम मूलावस्था, उत्तरावस्था, उत्तमावस्था]

70) विशेषण चुनकर वाक्य पूरा करें –
" लोग अपनी परम्परागत वेशभूषा में थे "।
A) नगर वाले (b) स्थान (c) स्थान वाले (d) स्थानीय

71) संज्ञा से निर्मित विशेषण शब्द है ? (APO 2015)
A) अच्छा (b) दस (c) पाशविक (d) भला

72) इनमें से कौनसा विशेषण संज्ञा से नहीं बना है ?
A) जोधपुरी (b) प्यारा (c) पढ़ाकू (d) रंगीला

73) किस वर्ग के सभी शब्द विशेषण नहीं है ?
A) उदारता, सौंदर्य (b) थोड़ा, तीन (c) दूसरा, पापी, (d) मीठा, ह...

74) " टोकरी में मीठे संतरे हैं " (RJS 2014)
उपर्युक्त वाक्य में 'मीठा' शब्द में विशेषण है ?
→ गुणवाचक विशेषण।

75) कौनसा शब्द संज्ञा से बना हुआ विशेषण नहीं है ?
[RPSC, LDC 2013]
A) धूमिल (b) प्राथमिकता (c) फेनिल (d) लौकिक

76) कौनसा शब्द संज्ञा से बना हुआ विशेषण नहीं है ?
A) भयंकर (b) रुचिकर (c) लाभकर (d) शुभंकर

77) संज्ञा से बना हुआ विशेषण नहीं है ?
A) नाटकीय (b) मानवीय (c) वित्तीय (d) स्वकीय

78) 'मानव' शब्द से विशेषण बनेगा – PTI WAR 201..
→ मानवीय

Date
Page

05/04/25

(79) किस वाक्य में 'सार्वनामिक विशेषण' है ?
(A) राम एक किलो दूध पी गया।
(b) मुझे खाने के लिए दे।
(C) वह बहुत होशियार लड़का है।
(d) वह लड़की गीत गा रही थी

(80) किसमें 'अनिश्चयवाचक सार्वनामिक विशेषण' नहीं है
(A) किसी ने उसे धमकाया।
(b) दाल में कुछ काला है।
(C) मुझे कोई पुस्तक दे दीजिए
(d) वह बहुत समझदार है।

(81) संज्ञा से निर्मित विशेषण है - (LDC-RPSC 2011)
(A) कृपालु (b) खादक (c) तृप्त (d) स्थूलित

(82) संज्ञा शब्द से बना विशेषण नहीं है -
(A) दयालु (B) भूखा (C) लिखना (d) सड़कछाप (MF)

(83) कौनसा विशेषण संज्ञा से निर्मित नहीं है ?
(A) गन्तव्य (B) गरिष्ठ (C) पैशाचिक (d) हार्दिक

(84) भाववाचक संज्ञा से निर्मित विशेषण है ? (PSI 2011)
(A) ऊँचा (B) चलता (C) प्यारा (d) रंगीन

(85) विशेषण से भाववाचक बनने वाला शब्द है -
(A) खेलता (b) दौड़ता (C) महाता (d) शिष्टता

(86) 'हमें गरीबों पर दया करनी चाहिए।' रेखांकित में शब्द है -
(A) संज्ञा

Date
Page

06/04/25

(87) किस वाक्य में 'परिमाणवाचक विशेषण है ?
(A) इस बार बारिश में बहुत ओले गिरे।
(B) पकज्ज अच्छा गायक है।
(C) मैं सफेद कमीज पहनता हूँ।
(d) खेल का मैदान लम्बा है।

पटवार

(88) ईमानदार व्यक्ति का सम्मान होता है ? में विशेषण है
Ans → ईमानदार

(89) किस क्रम में गुणवाचक विशेषण है।
(A) उसने पाँच मीटर कपड़ा खरीदा
(B) उस वृक्ष को मत काटो
(C) बच्चों की त्वचा मुलायम होती है।
(d) उसके पास चार पुस्तकें हैं।

(90) परिमाणवाचक विशेषण है ?
(A) आज मैंने अधिक अंगूर खा लिए।
(b) थोड़े बच्चे दिखाई दे रहे हैं।
(C) सोहन पाँच लीटर दूध पी गया।
(d) रमन पाँच केले खा गया

(91) किस क्रमांक में निश्चित परिमाणवाचक विशेषण है ?
(A) उस पंखे को साफ करो
(b) कोई व्यक्ति आया है।
(C) थोड़ा आटा और मिलाना
(d) एक एकड़ जमीन में धान की फसल रखी है।

(92) परिमाणबोधक विशेषण है ?
(A) आज मैंने अधिक केले खा लिए
(b) उस पुस्तक को पढ़ो
(C) राम दो लीटर दूध पी गया
(d) श्याम पाँच केले खा गया

06/04

(93) सार्वनामिक विशेषण है।
(A) कुछ चने मेरे लिए छोड़ देना।
(b) प्रतीक पाँच केले खा गया।
(c) कुछ बच्चे चंदा माँग रहे थे।
(d) यह लड़का बहुत चालाक है।

(94) सार्वनामिक विशेषण का सही उदाहरण है?
(A) उसने मुझे बुलाया
(B) किसी को कुछ दे दो
(c) उस घर में मेरी सहेली रहती है।
(d) जो आदमी कल आया था, वह मेरा भाई है।

(95) सार्वनामिक विशेषण है?
(A) किताब के थोड़े पन्ने बाकी हैं।
(b) थोड़ा दूध लाया है।
(c) रैली में लाखों लोग पहुँचे।
(d) वह खम्भा गिर जाएगा।

(96) संकेतवाचक विशेषण नहीं है?
(A) उस गाय को चारा डालो
(b) थोड़ा भोजन करो
(c) यह लड़का सुन्दर है।
(d) वह घर अब यहाँ नहीं है।